लोकतंत्र की आत्मा है - संवाद

हरियाणा संवाद

पाक्षिक 16 से 31 जनवरी 2021 www.haryanasamvad.gov.in अंक-10

"व्यक्ति महज अपना दृष्टिकोण बदलकर अपना भविष्य बदल सकता है"

: ओपरा विनफ्रे

सुण मेरी बहना-सुण मेरे भाई, अब स्मार्टटैब से करो पढ़ाई

3

कम लागत में अधिक मुनाफ़ा, इम्युनिटी बूस्टर है खुम्ब

5

राष्ट्रीय पर्व : 26 जनवरी

8

रेल कॉरिडोर से बढ़ेंगे निर्यात के अवसर

विशेष प्रतिनिधि

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने हरियाणा को रेलवे की एक और बड़ी परियोजना दी है। उन्होंने रेवाड़ी से मदार खंड तक 306 किलोमीटर लंबे वेस्टर्न डेडिकेटिड फ्रेट कॉरिडोर (डब्ल्यूडीएफसी) को राष्ट्र को समर्पित किया। यह कॉरिडोर राज्य के लिए निर्यात के नए अवसर पैदा करेगा और प्रदेश के आर्थिक विकास में मील का पत्थर साबित होगा।

श्री नरेंद्र मोदी ने न्यू अटेली स्टेशन (हरियाणा) और न्यू किशनगढ़ स्टेशन (राजस्थान) से दुनिया की पहली डबल-स्टैक 1.5 किलोमीटर लंबी कंटेनर ट्रेन को भी हरी झंडी दिखाई। मुख्यमंत्री श्री मनोहर लाल और उप-मुख्यमंत्री श्री दुष्यंत चौटाला ने भी वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से न्यू अटेली स्टेशन पर ट्रेन को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया।

कॉरिडोर हरियाणा और राजस्थान के किसानों, उद्यमियों और व्यापारियों सहित समाज के सभी वर्गों के लिए नए अवसर पैदा करेगा। उन्होंने कहा कि यह कॉरिडोर न केवल हरियाणा और राजस्थान दोनों राज्यों में कृषि और संबद्ध गतिविधियों को आसान बनाएगा, बल्कि इससे औद्योगिक क्षेत्र को भी काफी बढ़ावा मिलेगा, क्योंकि इन राज्यों के विनिर्माताओं और उद्योगों की राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय बाज़ारों तक सीधी पहुंच होगी।

प्रधानमंत्री ने कहा कि एक ओर जहां देश के नागरिकों को सभी आवश्यक सुविधाएं जैसे कि आवास, बिजली, गैस, शौचालय, इंटरनेट आदि उपलब्ध कराई जा रही हैं। ये कल्याणकारी कार्य तीव्र गति से चलाए जा रहे हैं। वहीं, दूसरी ओर उद्योगों को भी सुविधाएं दी जा रही हैं। उन्होंने कहा कि वैश्विक बाज़ार की मांग को ध्यान में रखते हुए देश में परिवहन के सभी माध्यमों जैसे सड़क, वायुमार्ग, रेलवे और जलमार्ग कनेक्टिविटी को और मज़बूत किया जा रहा है। देश में पिछले छः वर्षों में रेलवे ट्रैक के चौड़ीकरण और विद्युतीकरण पर जितनी राशि खर्च की गई है, उतनी पहले कभी नहीं की गई।

हरियाणा बंदरगाह के जरिए कर सकेगा निर्यात

वेस्टर्न डेडिकेटिड फ्रेट कॉरिडोर 1504 किलोमीटर लंबा है, जिसमें से 177 किलोमीटर हरियाणा से होकर गुजरता है। जब यह कॉरिडोर उत्तर प्रदेश, राजस्थान, गुजरात और महाराष्ट्र से होते हुए मुंबई तक जाएगा तो हरियाणा के औद्योगिक और कृषि उत्पादों की बंदरगाह तक सीधी पहुंच होगी। इस प्रकार, यह कॉरिडोर हरियाणा से निर्यात की नई क्षमताओं को पैदा करेगा और राज्य के आर्थिक विकास में एक मील का पत्थर साबित होगा।

इस कॉरिडोर से गुरुग्राम और फरीदाबाद के ऑटो-मोबाइल, आईटी, टेक्सटाइल, इंजीनियरिंग, इलेक्ट्रॉनिक्स, केमिकल और फार्मास्युटिकल उद्योगों को फ़ायदा होगा। इसी प्रकार, इससे झज्जर के फुटवियर और सोमेट उद्योग, सोनीपत के ऑटो मोबाइल पार्ट्स, पानीपत के उद्योग, यमुनानगर के प्लाईवुड, अंबाला के वैज्ञानिक उपकरण, सिरसा के एग्रो एवं खाद्य, करनाल के धान उत्पादक और फुटवियर तथा कृषि उपकरण उद्योगों के लिए भी निर्यात के नए रास्ते खुलेंगे।

पीएम ने छह वर्ष में दी कई सौगात

पिछले छह वर्षों के दौरान प्रधानमंत्री ने हरियाणा के लोगों को कई सौगात दी हैं। इनमें रेल कोच रिपेयर फैक्ट्री, कुण्डली-मानेसर-पलवल एक्सप्रेस-वे, कुण्डली-गाजियाबाद-पलवल एक्सप्रेस-वे, बल्लभगढ़-मुजेसर, मुंडका-बहादुरगढ़, गुरुग्राम-सिकंदरपुर, फरीदाबाद-बल्लभगढ़ मैट्रो लिंक, रोहतक में देश का पहला एलिवेटिड रेलवे ट्रैक और रोहतक-महम-हांसी रेलवे लाईन आदि शामिल हैं।

कई परियोजनाओं पर कार्य प्रगति पर

हरियाणा सरकार द्वारा रेल मंत्रालय के साथ मिलकर राज्य में रेल अवसंरचना व रेल संपर्क को बढ़ाने के लिए एक संयुक्त उद्यम कंपनी हरियाणा रेल अवसंरचना विकास निगम लिमिटेड (एचआरआईडीसी) की स्थापना की गई है। यह कंपनी हरियाणा ऑर्बिटल रेल कॉरिडोर के अलावा अन्य कई रेल परियोजनाओं पर काम कर रही है। इनमें कुरुक्षेत्र-नरवाना रेलवे लाइन पर एलिवेटिड ट्रैक, करनाल-यमुनानगर नई रेलवे लाइन, कैथल में एलिवेटिड रेलवे लाइन और जींद-हांसी नई रेलवे लाइन आदि शामिल हैं। रोहतक में 315 करोड़ रुपए की लागत से तैयार एलीवेटिड रेलवे ट्रैक पूर्ण हो चुका है तथा कुरुक्षेत्र की परियोजना पर जल्द काम शुरू होगा।

आने वाला समय और समृद्ध होगा : मोदी

देशवासियों को नए साल की शुभकामनाएं देते हुए प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने कहा कि वेस्टर्न डेडिकेटिड फ्रेट कॉरिडोर (डब्ल्यूडीएफसी) के रेवाड़ी से मदार खंड के उद्घाटन के साथ ही केंद्र सरकार के देश में आधुनिक आधारभूत संरचना विकसित करने के अभियान में एक नया अध्याय जुड़ गया है। पिछले कुछ दिनों में हुए बड़ी संख्या में इंफ्रास्ट्रक्चर परियोजनाओं का उद्घाटन और शिलान्यास इस बात का स्पष्ट संकेत है कि 2021 का आने वाला समय देश के लिए और समृद्ध होगा।

हरियाणा ऑर्बिटल रेल कॉरिडोर से बढ़ेगा रोजगारः मनोहरलाल

मुख्यमंत्री मनोहर लाल ने कहा है कि 'हरियाणा ऑर्बिटल रेल कॉरिडोर' परियोजना की स्वीकृति हो चुकी है। यह परियोजना पूरे राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र को डेडिकेटिड फ्रेट कॉरिडोर से जोड़ती है। यह एनसीआर के आर्थिक केन्द्रों को भारत के पश्चिमी और पूर्वी बंदरगाहों से उच्च गति व उच्च क्षमता वाली सहज कनेक्टिविटी प्रदान करेगी तथा यात्रा के समय व लागत को कम करके निर्यात को प्रोत्साहन देगी। पलवल से सोनीपत तक की इस परियोजना को हरियाणा सरकार व रेल मंत्रालय की संयुक्त भागीदारी से बनाया जा रहा है। इसकी अनुमानित लागत 5618 करोड़ रुपए है और इसकी 2025 तक बनकर तैयार हो जाने की उम्मीद है।

वैक्सीनः 16 से शुरू होगा टीकाकरण

स्वास्थ्य विभाग ने कोविड-19 वैक्सीन रोल आउट का सफल कार्यान्वयन सुनिश्चित करने के लिए सभी 22 जिलों में वैक्सीन का ड्राई रन किया, जिसमें 3,300 लाभार्थी शामिल हुए। सभी जिलों में चिह्नित सेशन साइट, जिसमें रेलम क्षेत्र सहित तीन शहरी तथा तीन ग्रामीण साइट शामिल है पर 132 सत्र आयोजित किए गए।

वैक्सीनेशन का अभियान 16 जनवरी से शुरू होने जा रहा है। ड्राई रन के दौरान विभिन्न गतिविधियों जैसे वैक्सीनेटर और सुपरवाइजरों की पहचान करना, साइट की पहचान कर उसे पिन कोड के साथ टैग करना, कोविड-19 वैक्सीन के लाभार्थियों को एसएमएस भेजना इत्यादि को सरलता से किया गया।

केन्द्र सरकार के दिशानिर्देशों के अनुसार, कोविड-19 वैक्सीन लगाने की शुरुआत वर्ष में क्रमिक रूप से कई समूहों से होगी और इसे हेल्थ केयर वर्कर्स से शुरू किया जाएगा।

श्रेणी-1 के तहत स्वास्थ्य कर्मचारियों का टीकाकरण किया जाएगा। श्रेणी-2 के अन्तर्गत पालिका और सफाई कार्यकर्ता, राज्य और केंद्रीय पुलिस बल, सिविल डिफेंस और सशस्त्र बलों जैसे फ्रंट लाइन कार्यकर्ताओं का टीकाकरण किया जाएगा। श्रेणी-3 के अन्तर्गत 50 वर्ष से अधिक आयु के लोगों और श्रेणी-4 में 50 वर्ष से कम आयु के ऐसे लोगों का टीकाकरण किया जाएगा जो बीमार है।

राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन (एनएचएम), हरियाणा के मिशन निदेशक श्री प्रभजोत सिंह ने बताया कि प्रदेश में एक वर्ष में लगभग 67 लाख लोगों को टीका लगाया जाएगा। इनमें स्वास्थ्य कार्यकर्ता लगभग (2 लाख), फ्रंट लाइन वर्कर्स (4.5 लाख), 50 साल की आयु से ऊपर की आबादी (58 लाख), 50 साल से कम आयु के ऐसे लोग जो बीमार है (2.25 लाख), शामिल हैं।

वैक्सीन लगवाने के लिए कोविन पोर्टल पर रजिस्ट्रेशन करवाना अनिवार्य होगा। वैक्सीन लगने से पहले कोरोना हो गया तो ये वैक्सीन नहीं लगाई जाएगी। ऐसे मामले में वैक्सीन लगवाने के लिए 28 दिन का तक इंतजार करना होगा। बस शर्त है कि वैक्सीन लगवाने वाले दिन खांसी, बुखार, जुकाम जैसे लक्षण नहीं होने चाहिए।

पहली डोज के बाद दूसरी के लिए मोबाइल पर मैसेज आएगा। उसमें तारीख और जगह बताई जाएगी। अस्पताल में फोटो युक्त डाक्यूमेंट, मोबाइल का मैसेज दिखाना होगा। डाक्यूमेंट्स जांच के बाद व्यक्ति को रूम के दूसरे हिस्से में ले जाया जाएगा, जहां हेल्थ ऑफिसर बारी-बारी से वैक्सीन का इंजेक्शन लगाएंगे। टीका लगाने के बाद व्यक्ति को 30 मिनट तक डाक्टरों की निगरानी में रखा जाएगा। संवाद ब्यूरो

संपादकीय

संवाद ज़रूरी

किसान स्वयं भी असमंजस में हैं। थोड़ा संतोष है तो कुछ उन तत्वों को है जो वर्तमान असंतोष के बनाए रखने के पक्षधर हैं। यानी समस्या का बने रहना कुछ दलों/तत्वों को लाभप्रद लगता है। लेकिन एक सुखद पक्ष यह भी है कि किसान अभी भी अपना आंदोलन शांतिपूर्ण ढंग से चला पा रहे हैं हालांकि संकट उनके लिए भी है क्योंकि कुछ उपद्रवी तत्व इस अलाव में अपनी घुसपैठ की फ़िराक में हैं। दिक्कत है कि मूल मुद्दे पर आपसी सूझ-बूझ का अभाव है।

9 सितम्बर की स्थिति में रबी सीजन में गेहूं पर एमएसपी का लाभ लेने वाले 43.33 लाख किसान थे, यह पिछले साल के 35.57 लाख से करीब 22 प्रतिशत ज्यादा थे। 2016-17 में सरकार को एमएसपी पर गेहूं बेचने वाले किसानों की संख्या 20.46 लाख थी। अब इन किसानों की संख्या 112 प्रतिशत ज्यादा है।

खरीफ में एमएसपी पर धान बेचने वाले किसानों की संख्या 2018-19 के 96.93 लाख के मुकाबले बढ़कर 1.24 करोड़ हो गई है यानी 28 फीसदी ज्यादा। इसमें अहम सवाल है कि क्या सभी किसान एमएसपी का लाभ ले पाते हैं।

खरीफ सीज़न में धान बेचने वाले किसानों की संख्या 1.24 करोड़ थी। इनमें से पंजाब के 11.25 लाख और हरियाणा के 18.91 लाख किसान थे। प्रधानमंत्री किसान योजना के तहत देश के 14.5 करोड़ किसान परिवारों को लाभ मिलता है लेकिन एमएसपी का लाभ लेने वाले किसानों की संख्या अधिकतम 1.24 करोड़ रही है।

स्थिति यह भी स्पष्ट है कि आखिर मसला बातचीत से ही हल होगा। यह भी हकीकत है कि बिहार, उत्तरप्रदेश व मध्यप्रदेश में कई अंचल ऐसे हैं जहां 'होरी' का गोदान अब भी नहीं हो पाता। यह मसला बेहद पेचीदा है। विशेषज्ञ यह भी चेतावनी दे रहे हैं कि न्यूनतम समर्थन मूल्य पर सारी फसलों की खरीद को अनिवार्य बनाने से किसानों का नुक़सान होगा। निजी कंपनियों के लिए अंतरराष्ट्रीय बाज़ार खुला हुआ है। अगर किसी फसल की कीमत ज्यादा होती है तो कंपनियां इसे बाहर के खुले बाज़ार से खरीदने लगेंगी, जिससे किसानों की फसलों की पूरी खरीद नहीं हो पाएगी और इससे उनका ज्यादा नुक़सान होगा।

ये ऐसे मुद्दे हैं जिन पर किसान नेताओं को भी खुले मन से विचार करना होगा और सरकार के साथ सकारात्मक भाव से संवाद करना होगा। संवाद से हर समस्या का समाधान संभव है। कहना गलत न होगा आंदोलन जितना लंबा होता जा रहा है शरारती तत्वों के शामिल होने का अंदेशा बढ़ता जा रहा है। इसलिए समय रहते किसान सकारात्मक संवाद करें और विरोध के लिए विरोध करने वालों से दूर रहें।

- डा. चंद्र त्रिखा

सरकारी योजनाओं का सरलीकरण सबसे बेहतर

राष्ट्रपति श्री रामनाथ कोविंद ने हरियाणा को अंत्योदय सरल पोर्टल के लिए डिजिटल इंडिया अवार्ड 2020 से सम्मानित किया है।

हरियाणा को इलैक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय द्वारा 'एक्सीलेंस इन डिजिटल गवर्नेंस - स्टेट/यूटी' की श्रेणी में प्लेटिनम अवार्ड दिया गया है। सरकार की ओर से प्रदेश के नागरिकों को सभी सेवाओं और योजनाओं को सरल और बेहतर ढंग से उपलब्ध कराने में देश में अग्रणी रहने पर यह प्रतिष्ठित पुरस्कार दिया गया है।

मुख्यमंत्री सुशासन सहयोगी एवं परियोजना निदेशक डॉ. राकेश गुप्ता ने कहा कि डिजिटलीकरण के युग में अंत्योदय सरल पोर्टल बहुत सफल रहा है। राज्य भर में नागरिक सेवाओं के लिए इस वन-स्टॉप डिजिटल प्लेटफॉर्म की शुरुआत के बाद से योजनाओं एवं सेवाओं के लिए 3.4 करोड़ से अधिक आवेदन प्राप्त हुए। अंत्योदय सरल पोर्टल के माध्यम से मासिक आधार पर 5.5 लाख से अधिक आवेदन प्राप्त होते हैं। इसके अलावा, नागरिकों को प्रति माह 20 लाख से अधिक एसएमएस भेजे जाते हैं, जो उन्हें उनके आवेदनों की स्थिति के बारे में बताते हैं। डॉ गुप्ता ने बताया कि अंत्योदय सरल प्लेटफॉर्म एनआईसी, हरियाणा और संबंधित विभागों की तकनीकी टीमों द्वारा तैयार किया गया है। उन्होंने कहा कि इस पोर्टल को बिना किसी बाहरी सहायता के बहुत ही कम लागत में विकसित किया गया है, जबकि बाहर इसी कार्य के लिए बहुत राशि ली जाती है।

क्या है अंत्योदय सरल

- अंत्योदय सरल (saralharyana.gov.in) सरकार की ओर से नागरिकों को सार्वजनिक सेवा प्रदान करने का एक प्लेटफॉर्म है।
- नागरिक ऑनलाइन पोर्टल के माध्यम से 40 विभागों, बोर्डों व निगमों की 549 सरकारी योजनाओं एवं सेवाओं के लिए निकटतम कॉमन सर्विस सेंटर (सीएससी) पर या राज्य सरकार द्वारा संचालित 117 अंत्योदय सरल केंद्रों पर आवेदन कर सकते हैं।
- अंत्योदय सरल नागरिकों को आवश्यक दस्तावेजों, शुल्क आदि के संदर्भ में राज्य भर में मानक सेवा प्रदान करता है।
- नागरिक ऑनलाइन पोर्टल के माध्यम से अपने आवेदन की स्थिति भी देख सकते हैं।
- यदि नागरिक के पास कोई प्रश्न या शिकायत है, तो वह टोल फ्री हेल्पलाइन नंबर (1800-2000-023) पर कॉल कर सकता है।
- हेल्पलाइन के माध्यम से 97,000 से अधिक शिकायतें प्राप्त हुई हैं, जिनमें से 96 प्रतिशत का समाधान कर दिया गया है।
- नागरिकों ने पांच अंकों में से अंत्योदय सरल को 4.3 अंक की रेटिंग दी है।
- नागरिकों को अब सूचना मांगने, सेवा के लिए आवेदन करने या किसी भी देरी के बारे में शिकायत करने के लिए सरकारी कार्यालयों के चक्कर लगाने की आवश्यकता नहीं है।

संवाद ब्यूरो

बिजली का घरेलू कनैक्शन मिलेगा 30 दिन में

बिजली मंत्री रणजीत सिंह ने कहा कि राज्य में बिजली के घरेलू कनैक्शन 30 दिनों के भीतर दिए जाएंगे। इसके अलावा, बिजली विभाग द्वारा 7500 ट्यूबवैल कनैक्शन दिए जा चुके हैं और 3500 ट्यूबवैल कनैक्शन आगामी फरवरी, 2021 तक जारी कर दिए जाएंगे ।

बिजली मंत्री रणजीत सिंह ने बताया कि कुल 17500 कनैक्शन के लिए आवेदन किये गये थे । शेष कनैक्शनों में किसानों को छूट दी गई है। उन्होंने बताया कि अब किसानों को 3 स्टार मोटर बाजार से खरीदने की छूट दी गई है और ये कनैक्शन भी जल्द ही लगा दिए जायेंगे।

बिजली मंत्री ने बताया कि आगामी 31 मार्च, 2021 तक प्रदेश भर के सभी खराब खंभों को ठीक किया जायेगा या बदल दिया जाएगा। इसके अलावा, बिजली विभाग के सभी खम्भों की निशानदेही (मार्किंग) की जायेगी ताकि मुख्यालय स्तर से इनकी निगरानी की जा सके। उन्होंने बताया कि अब ऐसे सभी खंभों का रिकार्ड भी रखा जाएगा ताकि किसी भी प्रकार का दुरूपयोग न हो सके। इस संबंध में पिछले दिनों बिजली निगमों के वरिष्ठ अधिकारियों की बैठक की गई जिसमें निर्देश दिए गए कि आगामी 31 मार्च, 2021 तक सभी खराब खंभों को ठीक किया जाए या उन्हें बदला जाए।

24 घंटे बिजली की आपूर्ति

उन्होंने बताया कि अब प्रदेश के 5080 गांवों को "हमारा गांव-जगमग गांव" योजना के तहत 24 घंटे बिजली की आपूर्ति की जा रही है। इस योजना के तहत लगभग 72 प्रतिशत गांवों को कवर कर लिया गया है और इसके अंतर्गत पंचकूला, अंबाला, कुरूक्षेत्र, यमुनानगर, करनाल, गुरूग्राम, फरीदाबाद, सिरसा, रेवाड़ी व फतेहाबाद जिलों में 24 घंटे बिजली की आपूर्ति की जा रही है। उन्होंने बताया कि शीघ्र ही शेष गांवों को भी इस योजना के तहत 24 घंटे बिजली की आपूर्ति की जाएगी।

बिजली मंत्री ने बताया कि बिजली के लाईन लॉस को 30 प्रतिशत से घटाकर 17 प्रतिशत तक लाया गया है और इसे और कम करने की दिशा में सकारात्मक कदम उठाये गये हैं। उनका मानना है कि आने वाले समय में जल्द ही तीन से चार प्रतिशत तक लाईन लोसिस को कम किया जाएगा।

200 एसडीओ की भर्ती की जायेगी

रणजीत सिंह ने बताया कि विभाग की कार्यक्षमता में वृद्धि लाने के लिए जल्द ही 200 एसडीओ की भर्ती की जायेगी। इसके अलावा, उन्होंने बताया कि गुरुग्राम, फरीदाबाद, पंचकूला व करनाल में स्मार्ट मीटर लगाने के लिए पायलट योजना संचालित है, जिसे बाद में राज्य के अन्य शहरों में लागू किया जाएगा। उन्होंने बताया कि स्मार्ट मीटर के लगने से पारदर्शिता आएगी। अभी दस लाख स्मार्ट मीटरों का ऑर्डर दिया गया है और इन मीटरों के लगने के उपरांत 20 लाख और मीटर मंगवाए जाएंगे।

संवाद ब्यूरो

योजनाओं के लाभ की गारंटी

'परिवार पहचान पत्र'

केंद्र व राज्य सरकार की विभिन्न योजनाओं का समस्त पात्र परिवारों को लाभ पहुचाने के लिए 'परिवार पहचान पत्र' योजना शुरू की गई है। योजना के मुताबिक सभी विभागों की कल्याणकारी योजनाओं को परिवार पहचान पत्र से जोड़ा जाएगा। मुख्यमंत्री परिवार समृद्धि योजना (एमएमपीएसवाई) जो 26 जनवरी, 2020 को शुरू की गई थी और तीन पेंशन योजनाएं - वृद्धावस्था सम्मान भत्ता योजना, दिव्यांग जन पेंशन योजना और विधवा व निराश्रित महिला पेंशन योजना को परिवार पहचान पत्र से जोड़ दिया गया है।

परिवार पहचान पत्र कार्यक्रम को और गति देने के लिए एक अलग नागरिक संसाधन सूचना विभाग की स्थापना की गई है। राज्य सरकार ने प्रदेश में प्रत्येक परिवार को एक अलग पहचान प्रदान करने के लिए अभियान शुरू किया है। राज्य में 56.20 लाख परिवारों के उपलब्ध रिकॉर्ड में से परिवारों का डाटा तैयार कर परिवार पहचान पत्र प्रदान किया जा रहा है।

राज्य सरकार द्वारा विभिन्न विभागों की योजनाओं के एकीकरण के अभियान के तहत, उन सभी परिवारों के राशन कार्ड तैयार किए जाएंगे, जिनके पास वर्तमान में कोई राशन कार्ड नहीं है, परंतु उपयुक्त श्रेणी के राशन कार्ड के लिए पात्र हैं।

उप मुख्यमंत्री दुष्यंत चैटाला ने कहा कि छह महीनों के भीतर, 56 लाख परिवारों के लगभग एक करोड़ 95 लाख लोगों का डाटा पीपीपी के साथ जोड़ा गया है, जो राज्य की कुल आबादी का लगभग 80 प्रतिशत है।

व्यवस्था में पारदर्शिता आएगी: मनोहरलाल

मुख्यमंत्री मनोहर लाल ने कहा कि सरकार की विभिन्न योजनाओं का लाभ उनके घर-द्वार तक पहुंचाने के लिए 'परिवार पहचान पत्र' योजना की शुरुआत की गई है। सभी विभागों की योजनाओं के एकीकरण से न केवल सेवाओं का प्रभावी और कुशल वितरण सुनिश्चित होगा, भ्रष्टाचार और लालफीताशाही पर भी अंकुश लगेगा।

सलाहकार संपादक : डा. चंद्र त्रिखा
सह संपादक : मनोज प्रभाकर
संपादकीय टीम : संगीता शर्मा, सुरेंद्र मलिक, मनोज चौहान
संपादन सहायक : सुरेंद्र बांसल
चित्रांकन एवं डिज़ाइन : गुरप्रीत सिंह
डिजिटल सपोर्ट : विकास डांगी

गुरुग्राम के सोहना व नूंह के तावडू के बीच भूतलाका गांव की अरावली हिल्स की चट्टानों को काटकर एक किलोमीटर लंबी सुरंग तैयार हो चुकी है। यह विश्व की सबसे ऊंची सुरंग होगी। ऊंचाई 11.7 मीटर व चौड़ाई 15 मीटर है।

चार हाईवे-एलिवेटेड रेल ट्रैक इसी माह मिलेंगे। रोहतक-गोहाना ट्रैक पर निर्माणाधीन देश का पहला रेलवे एलिवेटेड ट्रैक जनवरी में बनकर तैयार हो रहा है। प्रोजेक्ट के चालू होने से रोहतक शहर से चार रेलवे फाटक हटा दिए जाएंगे।

सुण मेरी बहना-सुण मेरे भाई, अब स्मार्ट टैब से करो पढ़ाई

शिक्षा विभाग स्कूल-कालेज में पढ़ने वाले विद्यार्थियों के लिए हर सुविधा मुहैया करा रहा है। विभाग की नीतियों व अध्यापकों की मेहनत से शिक्षा की गुणवत्ता में निरंतर सुधार देखा जा रहा है। यही वजह है प्रदेश के राजकीय स्कूलों में विद्यार्थियों की संख्या में अप्रत्याशित बढ़ोतरी हुई है।

योग्यता के आधार पर नौकरियां मिलने का जो सिलसिला शुरू हुआ है उसके बाद ग्रामीण व शहरी क्षेत्र के बच्चों ने पढ़ाई में रूचि लेना शुरू कर दिया है। यह राज्य सरकार के सुशासन का ही परिणाम है कि प्रादेशिक व राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगी परीक्षाओं में हरियाणा प्रदेश के अनेक विद्यार्थी सुर्खियां बटोर रहे है।

लॉकडाउन अवधि में बेशक पढ़ाई व्यवस्था में व्यवधान आया लेकिन उस दौर में मिली चुनौतियों से पार पाया जा रहा है। ऑनलाइन पढ़ाई की जो परंपरा प्रारम्भ हुई है उसे और मजबूत बनाने की योजना पर काम शुरू हुआ है। इतना ही नहीं विद्यार्थियों को ई बुक व अन्य पाठ्य सामग्री उपलब्ध कराई जा रही है।

योजना के मुताबिक आगामी शैक्षणिक सत्र की शुरुआत से सरकारी स्कूलों में पढ़ने वाले कक्षा 8वीं से 12वीं तक के सभी विद्यार्थियों को मुफ्त टैबलेट (टैब) वितरित करने की प्रक्रिया शुरू हो गई है। शिक्षण सामग्री और पाठ्यपुस्तकों से प्री-लॉडिड कंटेंट के साथ 8.20 लाख टैब वितरित किए जाएंगे। इससे विद्यार्थियों के सीखने की क्षमता में वृद्धि होगी और वे कक्षा में व बाहर तथा घर पर भी ऑनलाइन पढ़ाई कर सकेंगे।

पंचकूला में आयोजित स्कूल शिक्षा विभाग की एक बैठक में मुख्यमंत्री मनोहर लाल ने इस विशेष परियोजना पर अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए।

टैब इन ई-कंटेंट से लैस होंगे

- एप ऑनलाइन सामग्री,
- पीडीएफ पुस्तकें,
- क्यूआर कोडिड एनसीईआरटी सामग्री,
- एनूसेट वीडियो, दीक्षा ऑनलाइन सामग्री,
- शिक्षकों द्वारा तैयार किए गए यू-ट्यूब वीडियो,
- शिक्षकों द्वारा तैयार किए गए प्रश्न बैंक
- राष्ट्रीय पात्रता-सह-प्रवेश परीक्षा (नीट),
- संयुक्त प्रवेश परीक्षा (जेईई),
- राष्ट्रीय रक्षा अकादमी (एनईडीए)
- राष्ट्रीय शिक्षक परीक्षा (एनटीई)

सभी शिक्षा सामग्री एक एन्क्रिप्टेड डाटा कार्ड में प्री-लोडिड होगी, जिससे विद्यार्थी अध्ययन कर सकेंगे, मॉक टेस्ट दे सकेंगे और आगामी परीक्षाओं की तैयारी करने के लिए पिछले वर्ष के पेपर भी देख सकेंगे।

ये टैब विद्यार्थियों को पुस्तकालय की किताबों की तरह जारी किए जाएंगे, जिन्हें छात्र 10वीं और 12वीं की परीक्षा के बाद वापस लौटाएंगे। विद्यार्थियों को इन टैब के माध्यम से उन्नत शिक्षा मिलेगी और वे कक्षा से बाहर भी पढ़ाई करने में सक्षम होंगे। टैब के उचित उपयोग को सुनिश्चित करने के उद्देश्य से टैब में मोबाइल डिवाइस प्रबंधन (एमडीएम) अपलोड किया जाएगा। एमडीएम प्रत्येक छात्र के डिवाइस उपयोग, लॉग-इन नहीं करने वालों का भौतिक सत्यापन करने सहित डिवाइस की ट्रैकिंग रखेगा और टैब की बिक्री के खिलाफ निगरानी भी सुनिश्चित करेगा। विद्यार्थी टैब का उपयोग केवल अपनी पढ़ाई के लिए करेंगे और वे किसी भी अवांछित वेबसाइट का उपयोग नहीं कर पाएंगे और न ही कोई अन्य सामग्री को डाउनलोड कर पाएंगे।

- संवाद ब्यूरो

इलैक्ट्रिक वाहनों को फ्री चार्जिंग की सुविधा

इलैक्ट्रिक वाहनों के उपयोग को बढ़ावा देने के लिए पंचकूला में प्रदेश का पहला ई-चार्जिंग स्टेशन शुरू किया गया है। इसकी शुरुआत केन्द्रीय पैट्रोलियम एवं प्राकृतिक गैस मंत्रालय के सचिव तरूण कपूर ने पंचकूला के अक्षय ऊर्जा भवन में की। इस ई-चार्जिंग स्टेशन में सभी प्रकार के इलैक्ट्रिक वाहनों को फ्री-चार्जिंग की सुविधा प्रदान की जाएगी।

तरूण कपूर ने बताया कि यदि ई-वाहनों के लिए पर्याप्त मात्रा में ई-चार्जिंग स्टेशन उपलब्ध होंगे तो लोग ई-वाहनों का अधिक से अधिक उपयोग कर सकेंगे। उन्होंने कहा कि पैट्रोल एवं डीजल को बाहर से मंगवाना पड़ता है, लेकिन हमारे पास सौर ऊर्जा का पर्याप्त भंडार है, इसलिए ई-चार्जिंग स्टेशन देश के हर कोने में स्थापित करने के प्रयास किए जा रहे हैं ताकि लोगों को किसी प्रकार की असुविधा न हो। उन्होंने कहा कि अब इलैक्ट्रॉनिक युग में ई-वाहनों का प्रचलन बढ़ना अनिवार्य है, इसके लिए पैट्रोल पम्पों पर भी ई-चार्जिंग प्वाईंट की सुविधा मुहैया करवाने के लिए कार्य किया जा रहा है।

हरियाणा के नवीन एवं नवीकरणीय ऊर्जा विभाग के अतिरिक्त मुख्य सचिव टी. सी. गुप्ता ने कहा कि अक्षय ऊर्जा संरक्षण करने वाला हरियाणा भारत का पहला प्रदेश है। इसके उपयोग के लिए हरियाणा सरकार ने अनेक आवश्यक कदम उठाए हैं जिसका लाभ नागरिकों को मिला है। उन्होंने कहा कि ई-चार्जिंग स्टेशन उपलब्ध हो जाने से नागरिकों का ई-वाहनों की ओर रूझान बढ़ेगा। उन्होंने कहा कि वर्ष-2021 के दौरान हरियाणा के विभागों में किराए पर की जाने वाली गाड़ियों में ई-वाहनों को ही लिया जाएगा। यदि कोई ई-वाहन नहीं है तो उन्हें विभागों में हायर नहीं किया जाएगा, इसलिए सरकारी कार्यालयों में यह सुविधा मुहैया करवाई जा रही है।

500 स्थानों पर ई-चार्जिंग स्टेशन

अतिरिक्त मुख्य सचिव ने कहा कि विभाग द्वारा प्रदेश में 500 स्थानों पर ई-चार्जिंग स्टेशन लगाने का निर्णय लिया है ताकि हर तीन किलोमीटर के क्षेत्र में एक ई-चार्जिंग स्टेशन स्थापित हो सके। इसके साथ ही नेशनल हाईवे पर भी ई-चार्जिंग स्टेशन उपलब्ध करवाने के सकारात्मक प्रयास किए जा रहे हैं। उन्होंने बताया कि ई-वाहनों के आने से पेट्रोल व डीजल से चलने वाले वाहनों की प्रति किलोमीटर खपत भी बहुत कम होगी। गुप्ता ने बताया कि सरकार की ओर से इन पर सब्सिडी भी प्रदान की जा रही है। उन्होंने कहा कि ई-वाहनों से आवाज और प्रदूषण भी बहुत कम होगा और ई-चार्जिंग स्टेशन ई-वाहनों के क्षेत्र में क्रांति लाने में कारगर साबित होगा।

इस मौके पर करनाल, गुरुग्राम, फरीदाबाद, पंचकूला सहित पांच ई-वाहनों को चाबी सौंप कर रवाना किया गया। कार्यक्रम में मैसर्ज कवरजेंस एनर्जी सर्विस लिमिटेड सीईएसएल के साथ हरेडा ने एक समझौते पर हस्ताक्षर भी किए गए, जिसके तहत ई-वाहनों के लिए राज्य में इन्फ्रास्ट्रक्चर विकसित किया जाएगा।

संवाद ब्यूरो

महिलाओं की सुरक्षा के लिए प्रतिबद्धता

महिलाओं में पूर्ण सुरक्षा की भावना जागृत करने के लिए हरियाणा पुलिस ने वर्ष 2020 में अपने महिला हेल्पलाइन नंबर 1091 की कार्यप्रणाली में और सुधार किया। जहां महिला हेल्पलाइन पर प्राप्त सभी शिकायतों को देखा और निपटान किया गया, वहीं हेल्पलाइन नम्बर 1091 पर प्राप्त 88,000 शिकायतों में से 2,802 शिकायतों को जनवरी से नवंबर, 2020 के बीच एफआईआर में बदला गया।

अतिरिक्त पुलिस महानिदेशक (सीएडब्ल्यू) कला रामचंद्रन ने बताया कि 1091 पर देश में कहीं से भी कॉल किया जा सकता है और ऐसी शिकायतों को प्राथमिकता से निपटाने के लिए प्रत्येक जिले में विशेष रूप से महिला पुलिस अधिकारियों को प्रतिनियुक्त किया गया है।

दुर्गा शक्ति ऐप, जो संकट में फंसी महिलाओं को पैनिक बटन प्रदान करने वाली सॉफ्टवेयर एप्लिकेशन है, को भी इसी अवधि के दौरान हरियाणा में 51,000 से अधिक नए उपयोगकर्ता प्राप्त हुए हैं, जिससे इनकी कुल संख्या बढ़कर 2.17 लाख से अधिक हो गई है। दुर्गा शक्ति ऐप गूगल और एप्पल प्ले स्टोर, दोनों पर उपलब्ध है। इस ऐप के माध्यम से प्राप्त शिकायतों पर पुलिस ने 21 एफआईआर दर्ज की, 33 मामलों में निवारक कार्रवाई की और शेष 1,100 से अधिक मामलों का सौहार्दपूर्वक निपटान किया है। यह भी देखा गया कि यहां तक कि पंजाब, हिमाचल प्रदेश, राजस्थान, दिल्ली, उत्तर प्रदेश और केंद्र शासित प्रदेश चंडीगढ़ जैसे पड़ोसी राज्यों के उपयोगकर्ताओं ने भी किसी आपातकाल या संकट की स्थिति में सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए इस मोबाइल ऐप को डाउनलोड किया है।

कुरुक्षेत्र से नारनौल तक हाइवे का 75 प्रतिशत निर्माण कार्य पूरा हो चुका है। इनके अलावा जींद-सोनीपत व जींद-रोहतक राजमार्ग फोरलेन का कार्य चल रहा है। पानीपत से दिल्ली हाईवे को 12 लेन किया जाना है।

कुटेल में पं. दीनदयाल उपाध्याय मेडिकल यूनिवर्सिटी के कॉलेज में फिजियोथैरेपी व नर्सिंग कॉलेज का निर्माण हो चुका है। पहले फेज में 750 करोड़ रुपए खर्च होंगे।

फसल विविधिकरण से किसान हुए ख़ुशहाल

संगीता शर्मा

किसान को खेती एक फसल तक सीमित न करके, बल्कि फसल विविधिकरण को अपनाया चाहिए। तभी वह अपनी आय को दोगुनी कर सकता है। हरियाणा में अधिकतर किसान इस पहलू को अपनाएं हुए है। इसका उदाहरण रेवाड़ी के बावल खंड के झाबुवा गांव के किसान मनीराम है। उनके बेटे धमेंद्र चौधरी ने टेलीकॉम इंडस्ट्री में 70,000 रुपए प्रतिमाह की नौकरी छोड़कर खेती में उनके साथ कदमताल मिलाया है। खेती को 'एग्रीकल्चर बिजनेस' का नया रूप दिया है।

नई तकनीक हासिल करें

वर्ष 1988 से खेती कर रहे मनीराम पहले पारंपरिक खेती करते थे, लेकिन जब उन्होंने फसल विविधिकरण को अपनाया तब से खेती में अधिक कमाई होने लगी। उनके पास आठ एकड़ ज़मीन है, जिसमें सरसों, गेहूं, बाजरा, अरण्ड, मूंग व सब्ज़ियों की खेती करते हैं। खेतों में बदल-बदल कर खेती करते हैं, ताकि ज़मीन की उर्वरा शक्ति में वृद्धि हो। तारों पर लौकी व टमाटर की खेती करते हैं, यह तकनीक उन्होंने करनाल के घरौंडा स्थित इंडो-इज़रायल सब्ज़ी उत्कृष्टता केंद्र से हासिल की। इस तकनीक से वह अच्छी पैदावार लेकर अधिक दाम में लौकी व टमाटर बेचते हैं। वह मधुमक्खीपालन व मशरूम उत्पादन करके भी मुनाफ़ा कमा रहे हैं। पशुपालन से जैविक खाद तैयार करके खेतों में इस्तेमाल करते हैं। इसके अतिरिक्त केचुआ खाद घर में तैयार करते है।

अरण्ड की खेती से अधिक मुनाफ़ा

उन्होंने बताया कि डेढ़ एकड़ ज़मीन में अरण्ड की खेती करते है, जिसमें लागत 1,000 से 2,000 रुपए की आती है और मुनाफ़ा एक से डेढ़ लाख रुपए का होता है। अरण्ड की बिक्री राजस्थान व हैदराबाद में करते हैं। इसके अतिरिक्त ऑनलाइन भी इसके खरीददार आसानी से मिल जाते हैं। अरण्ड की खेती में एक पौधे के बीच में आठ फीट की दूरी होती है, जिसके कारण इंटरक्रॉप करके मूंग व उड़द की दाल भी उगा लेते हैं। इसके कारण दोगुणा लाभ हो जाता है।

मनीराम का कहना है कि किसान को समय के अनुसार खेती में नई तकनीक को अपनाना चाहिए। जिससे हम फसल की अच्छी पैदावार ले सकते हैं। उन्होंने कृषि विज्ञान केंद्र, बावल से मशरूम की खेती की तकनीक को सीखा और 200 बैग मशरूम लगाए और इनकी बिक्री आसानी के बावल की सब्ज़ी मंडी में हो जाती है। दो एकड़ ज़मीन में सरसों की बिजाई की है और इसमें 50 बी-बॉक्स रखें। मधुमक्खी पालन करके एक-साथ दो कमाई की जा सकती है। शुद्ध शहद की बिक्री भी आसानी से हो जाती है।

पानी की बचत करें

मनीराम अपने खेतों में सूक्ष्म सिंचाई और फव्वारा सिंचाई प्रणाली का प्रयोग करते हैं। इसके लिए उन्होंने हरियाणा सरकार की ओर से दी जा रही सब्सिडी का प्रयोग भी किया। उनका कहना है कि इस तकनीक से पानी की बचत के साथ पैदावार में बढ़ोतरी होती है। इसमें उनके बेटे धमेंद्र चौधरी भी विशेष योगदान दे रहे हैं और वह अन्य किसानों को भी सूक्ष्म सिंचाई प्रणाली का प्रयोग करने पर बल देते हैं। वह हरियाणा सरकार के सहयोग से खेतों में सौर ऊर्जा का पंप सैट का प्रयोग करते हैं। इससे उनकी बिजली की बचत होती है।

खेती मे संतुष्टि

प्रगतिशील किसान मनीराम 'खत्री किसान उत्पादक संगठन' बनाने की प्रक्रिया में जुटे हुए हैं। जिसके अंतर्गत वह लगभग 50 किसानों को शामिल करेंगे। उनकी पत्नी निहाल भी खेती में हाथ बटाती हैं। उनका कहना है कि खेती में परिवार को एकजुट होकर काम करना पड़ता है, तभी वह तरक्की कर सकते हैं। मनीराम के बेटे धमेंद्र चौधरी ने बताया कि दस साल तक टेलीकॉम इंडस्ट्री में काम के बाद उन्हें संतुष्टि नहीं हुई। इसलिए किसानी की ओर लौटना ही मुनासिब समझा। उन्होंने एग्रीकल्चर बिजनेस शुरू किया और मिनि ड्रिप इरिगेशन मशीन का काम शुरू किया। कम लागत में किसानों को उपलब्ध करवा रहे हैं ताकि पानी की बचत हो सके। उनकी योजना बारिश के पानी को एकत्रित करके उसको सिंचाई में प्रयोग करने की है। इसके लिए यह काम कर रहे हैं। साथ ही पिता के साथ खेती में जुटे रहते हैं। वह अरण्ड की खेती के बीच में धनिया व पालक की खेती कर रहे है ताकि दोगुना लाभ कमा सकें। उनका कहना है कि युवाओं को खेती की ओर अग्रसर होना चाहिए, इसे हम मुख्य रोज़गार के रूप में अपना सकते हैं।

जैविक खेती की अलख जगाते साइकिल मैन-नीरज कुमार

नाम-नीरज कुमार प्रजापति, उम्र-मात्र 23 वर्ष, जो कि किसानों के बीच साइकिल मैन के नाम से ख्याति प्राप्त कर चुके हैं। नीरज ने देशभर में 1 लाख 11 हजार 121 किलोमीटर की दूरी साइकिल से तय करने का लक्ष्य निर्धारित किया है, जिसके अंतर्गत ये राज्यों व जिलों के गांव-गांव पहुंचकर किसानों को कृषि को लाभकारी व्यवसाय बनाने के उपायों व नवीनतम तकनीकों की जानकारी देना है।

गोहाना के गांव आहुलाना निवासी नीरज कुमार प्रजापति ने अपना जीवन किसानों को समर्पित कर दिया है। किसानों की निःस्वार्थ सेवा तथा आम जनमानस के स्वास्थ्य के लिए उन्होंने लुधियाना में अपनी कंपनी को छोड़ दिया। वे 9 अप्रैल, 2019 से किसानों की सहायता में जुटे हुए है, ताकि किसानों को जैविक खेती के लिए प्रोत्साहित किया जा सके।

उनका कहना है कि गुड़-गोबर-गौमूत्र में खेती का सार छिपा है। किसानों को इसे गंभीरता से समझना होगा। यह जीरो खर्चे की और यही जैविक खेती है। गुड़-गोबर-गौमूत्र से किसानों को खाद तैयार करनी होगी। इससे पैदावार बेहतर होगी तथा कीटनाशकों पर होने वाले खर्च से बचत होगी। लोगों को भी कीटनाशक मुक्त अनाज व सब्जियां मिल सकेंगी। कीटनाशकों के प्रयोग से पैदा होने वाले अनाज व सब्जिया स्वास्थ्य के लिए अत्यधिक हानिकारक है।

नीरज स्वयं किसानों को गुड़-गोबर-गौमूत्र से खाद तैयार करने का प्रशिक्षण देते हैं। वे और उनका परिवार जय जवान-किसान-जय विज्ञान को समर्पित हैं। उनके पिता आनंद सिंह फौज से सेवानिवृत्त हैं और वे स्वयं किसानी को समर्पित है तो उनके बड़े भाई पंकज कुमार तकनीकी विशेषज्ञ है जो किसानों के लिए तकनीकी सहायता करते हैं। मिशन ऑर्गेनिक बाई साइकिल के नाम से नीरज अपने लक्ष्य को साधने में जुटे हुए है।

नीरज का कहना है कि वे लगातार कृषि विश्वविद्यालयों तथा कृषि विज्ञान केंद्रों में कृषि वैज्ञानिकों के संपर्क में रहते हैं। कहीं भी किसी भी गांव में किसी भी किसान को यदि किसी प्रकार की कृषि विशेषज्ञ सलाह व मदद की जरूरत होती है तो वे तुरंत मुहैया करवाते हैं। वे करीब ढाई हजार कृषि विशेषज्ञों/वैज्ञानिकों से जुड़े हुए हैं। उन्हें स्वयं भी अच्छी जानकारी प्राप्त है, जिसका लाभ किसानों को मिलता है। किसानों की सहायता के लिए वे सोशल मीडिया का भी पूर्ण सदुपयोग करते हैं। उन्होंने पिलाना के किसान राकेश को मल्टीपल क्रॉप, तिहाड़ मलिक के किसान को वर्मी कम्पोस्ट, बीधल के किसान को अमरूद बाग तथा मोई माजरी में धान उत्पादक किसान को हाल ही में विशेष रूप से मदद प्रदान की। हरियाणा के अलावा वे राजस्थान, पंजाब, दिल्ली, मध्य प्रदेश और उत्तर प्रदेश के गांवों का साइकिल से दौरा कर किसानों से सीधी भेंट कर चुके हैं।

कैंसर ट्रेन ने बदल दी जीवन की दिशा

साइकिल मैन नीरज कुमार प्रजापति का कहना है कि जब वे लुधियाना (पंजाब) में थे, तब उन्होंने कैंसर ट्रेन के विषय में सुना। इस ट्रेन में अधिकांश कैंसर मरीजों का आना-जाना था, जिसका प्रमुख कारण कीटनाशक युक्त भोजन था। यहीं से उन्होंने निर्णय लिया कि वे किसानों को जैविक खेती के लिए प्रोत्साहित करेंगे।

नेपियर घास से होगी हरे चारे की समस्या हल

साइकिल मैन नीरज कुमार हरियाणा के किसानों की हरे चारे की समस्या के समाधान के लिए नेपियर घास की जानकारी लेकर आए हैं। उनका कहना है कि यह घास ज्वार की भांति होती है जो पूरा वर्ष उपलब्ध रहती है। कम लागत में नेपियर घास उगाई जा सकती है। उन्होंने किसानों से निजामपुर, जौली, लाठ, तिहाड़ मलिक तथा बुसाना में नेपियर घास लगवाई भी है।

संवाद ब्यूरो

मोरनी में होती है हरड़ की खेती

प्रदेश का मोरनी खंड वैसे खूबसूरत वादियों के लिए प्रसिद्ध है। किन्तु इसका लाभदायक व अहम् पहलू यहां उपलब्ध औषधीय पौधे है, जो यहां के ज्यादातर किसानों की मुख्य फसल व पुश्तैनी कार्य है। चंडियाना गांव के किसान गोपाल राणा ने हरड़ के 300 पेड़ लगाए हैं। उन्होंने बी.टेक कम्प्यूटर साइंस की पढ़ाई की है।

गांव सारयों, उत्रयों, अदयों, राजी टिकरी, मांदना और खोवा में किसानों ने हरड़ और बहेड़ा के पेड़ लगाए हैं। गोपाल ने 20 बीघा जमीन पर हरड़ के 300 पेड़ लगाए हैं। वे और उनके मामा मिलकर खेती करते हैं। उन्होंने बताया कि 10 साल पहले हरड़ के पौधे लगाए थे जो अब पेड़ का आकार ले चुके हैं। हर साल दिसंबर से जनवरी माह में हरड़ की तुड़ाई की जाती है। यह कार्य आठ से 10 खेत मजदूर करते हैं जो इसी गांव के होते हैं।

हरड़ आयुर्वेदिक औषधि है जो त्रिफला चूर्ण का मुख्य घटक है। इसके अलावा आंवला व बहेड़ा के पेड़ भी यहां बहुतायत में मिलते है।

गोपाल बताते है कि हर सीजन में औसतन 80 क्विंटल हरड़ लगती है। इस बार अंदाजन 50 क्विंटल हरड़ की तुड़ाई होगी। अन्य दवाओं में भी हरड़ का इस्तेमाल किया जाता है। जब से लोगों का आयुर्वेद की और रुझान बढ़ा है तब से इसकी मांग बढ़ी है।

हरड़ दो तरह की होती है। गीली और सूखी। बाजार में दोनों तरह की हरड़ की बिक्री होती है। हरड़ को रेत में भून कर सुखाया जाता है। बाजार में ग्रीन और सूखी दोनों ही तरह की मांग है। बाज़ार में इसका भाव 3,500 से 5,000 रुपए प्रति क्विंटल तक बताया जाता है।

गोपाल ने बताया कि उनसे स्थानीय व्यापारी हरड़ खरीद लेते हैं, जो अपने-अपने स्तर पर मार्केट में सेल करते हैं। अमृतसर और दिल्ली में हरड़ की मंडी लगती है। जहां हरड़ के अच्छे दाम मिल जाते हैं। आयुर्वेद की बड़ी कंपनियां भी इन औषधियों को खरीद करती हैं।

किसानों को प्रोत्साहित किया जाता है- डा. अशोक

पंचकूला जिला बागवानी विभाग अधिकारी डॉ. अशोक कौशिक कहते है कि विभाग द्वारा किसानों को औषधीय खेती के लिए प्रोत्साहित किया जा रहा है। किसानों को औषधीय बीज पर सब्सिडी दी जाती है। हाल में ही मोरनी और पिंजौर में 150 एकड़ के लिए किसानों को हल्दी का बीज दिया गया। साथ ही उन्होंने बताया कि इस क्षेत्र की हल्दी पूरे देशभर में प्रसिद्ध है। मोरनी, कालका और पिंजौर के किसान अपना उत्पाद दिल्ली, पंजाब और राजस्थान में सेल करते हैं। किसानों को बाजार स्थानीय स्तर पर उपलब्ध हो। योजना पर काम चल रहा है। वैसे विभाग द्वारा किसानों को कोलेक्शन सैंटर, पैक हाऊस के लिए सब्सीडी दी जाती है ताकि 20 या अधिक किसान मिलकर अपना उत्पाद एक स्थान से बेच सकें।

मनोज चौहान

प्रदेश के अनुसूचित जाति के किसानों के कल्याणार्थ केंद्र व राज्य सरकार द्वारा अनेक योजनाएं चलाई गई हैं। वर्ष 2020-21 के लिए 193.63 करोड़ रुपए की विभिन्न योजनाओं का प्रावधान किया गया है।

हरियाणा सरकार ने राज्य में पांच लाख रुपए तक का सालाना कारोबार करने वाले छोटे व्यापारियों को बड़ी राहत देते हुए, उन्हें बाज़ार शुल्क में एक प्रतिशत छूट देने का निर्णय लिया है।

जल परियोजनाओं से खत्म होगा पानी का संकट

रेणुका लखवार और किशाऊ जल परियोजनाओं से हरियाणा को करीब 47 फीसद पानी मिलेगा। इन परियोजनाओं के पूरा होने के बाद हरियाणा में पेयजल व सिंचाई जल की कमी नहीं रहेगी। हरियाणा सरकार की कोशिश है कि इस वर्ष इस परियोजना पर तेजी से कार्य हो। परियोजना की लागत 4,557 करोड़ रुपए है। तीनों बांध परियोजनाओं की कुल लागत का 90 फीसदी केंद्र और 10 फीसदी राज्य खर्च करेंगे।

हिमाचल की रेणुका और उत्तराखंड की लखवार बांध परियोजना की तर्ज़ पर किशाऊ बांध परियोजना के लिए आधा दर्जन राज्यों के बीच समझौता प्रस्तावित है। इन तीनों परियोजनाओं का सबसे ज्यादा फायदा हरियाणा को होगा। रेणुका व लखवार बांध परियोजनाओं के लिए केंद्र व राज्यों के बीच समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर हो चुके है।

मुख्यमंत्री मनोहर लाल ने किशाऊ बांध परियोजना को सिरे चढ़ाने के लिए उत्तराखंड के मुख्यमंत्री से संपर्क साधा है। उत्तराखंड के मुख्यमंत्री त्रिवेंद्र रावत ने मनोहर लाल को इस परियोजना को धरातल पर उतारने के लिए हरसंभव सहयोग का भरोसा दिलाया।

गौरतलब है कि उत्तराखंड के देहरादून और हिमाचल के सिरमौर से गुजरने वाली यमुना की सहायक नदी टोंस पर किशाऊ बांध परियोजना का निर्माण होना है। इस परियोजना के बनने के बाद हरियाणा को सबसे ज्यादा पानी मिलेगा, जबकि उत्तराखंड और हिमाचल राज्यों को बिजली की आपूर्ति हो सकेगी।

यमुना की यह सहायक नदी उत्तरखंड से हिमाचल होते हुए छह राज्यों से होकर गुजरती है। सिरमौर में नदी पर 148 मीटर ऊंचा रेणुका डैम बनना है। इसमें 40 मेगावाट बिजली तैयार की जाएगी, जबकि पानी हरियाणा समेत बाकी राज्यों में बंटेगा।

> किशाऊ डैम परियोजना के लिए इस साल में एमओयू कर इसे आगे बढ़ाने के लिए हरियाणा सरकार बड़ी तेजी के साथ काम करेगी। रेणुका डैम, लखवार डैम और किशाऊ डैम से कुल पानी से 47 फीसदी हिस्सा अकेले हरियाणा को मिलेगा। इसके बाद राजस्थान और दिल्ली को पानी का फ़ायदा मिलने वाला है।
>
> -मनोहर लाल, मुख्यमंत्री
> हरियाणा

केंद्रीय जल संसाधन मंत्रालय को उम्मीद है कि सभी प्रोजेक्ट के पूरा होने के बाद इतना पानी होगा कि पंजाब व हरियाणा के बीच लंबे समय से चला आ रहा पानी का विवाद खत्म हो जाएगा।

किशाऊ बांध

किशाऊ बांध दो राज्यों हिमाचल प्रदेश और उत्तराखंड की सीमा पर बनना है। इस डैम के निर्माण की लागत 10 हजार 500 करोड़ रुपए बताई जा रही है। यह बांध एशिया का दूसरा सबसे बड़ा बांध होगा। किशाऊ बांध 236 मीटर ऊंचा और 680 मीटर लंबा होगा, जिससे करीब 660 मेगावाट बिजली का उत्पादन होगा। इस बांध के बनने से हरियाणा, राजस्थान, दिल्ली, उत्तर प्रदेश और उत्तराखंड को सिंचाई के लिए पानी मिलेगा। इस प्रोजेक्ट के तहत मोहराड़ से त्यूनी तक लगभग 32 किलोमीटर लंबी झील बनाई जाएगी। किशाऊ डैम को बनाने की जिम्मेदारी टिहरी हाइड्रो डेवलेपमेंट कारपोरेशन (टीएचडीसी) को दी गई है। यह बांध परियोजना 1987 में शुरु हुई थी। करार के तहत सालाना यमुना नदी के 11.983 अरब घन मीटर पानी से पांच राज्यों के बीच बंटवारा होना है। परियोजना की कुल लागत 3,966.51 करोड़ रुपये आंकी गई।

साभार

कम लागत में अधिक मुनाफ़ा इम्युनिटी बूस्टर है खुम्ब

हरियाणा सरकार द्वारा किसानों को फसल विविधिकरण अपनाने के लिए प्रोत्साहित किया जा रहा है। ऐसे में खुम्ब एक ऐसा व्यवसाय है जो बेहतर आय का साधन बन सकता है।

खुम्ब सेहत के लिए भी बहुत फ़ायदेमंद है और पोषण से भरपूर है। इससे कई तरह के व्यंजन बनाए जा सकते हैं और इसका परिरक्षण भी किया जा सकता है। महाराणा प्रताप बागवानी विश्वविद्यालय, करनाल के प्रवक्ता ने बताया कि मुरथल केंद्र में मशरूम की नई प्रजातियां आ चुकी हैं। किसानों को चाहिए कि वे इन आधुनिक प्रजातियों की जानकारी प्राप्त करें। खुम्ब उत्पादन के आर्थिक विश्लेषण व विपणन के बारे में जानकारी प्राप्त करने की भी बहुत आवश्यकता है। खुम्ब उत्पादन करके युवक/युवतियां स्वरोज़गार प्राप्त कर सकते हैं।

किसानों को सलाह है कि वे सफेद बटन खुम्ब के अलावा ढ़ींगरी खुम्ब, शिटाके खुम्ब, लायब्समैने खुम्ब, कॉर्डिसैप खुम्ब इत्यादि औषधीय खुम्बों का भी उत्पादन करें। खुम्ब के मूल्य संवर्धित उत्पाद जैसे अचार, बिस्कुट, पापड़ इत्यादि तैयार करके भी बाज़ार में बेचे जा सकते है।

रोज़गार का ज़रिया खुम्ब

कुरुक्षेत्र के बाजवा मशरूम फार्म के सरदार हरपाल सिंह ने बताया कि वे मशरूम की खेती ही नहीं, बल्कि टमाटर की पूयरी, सरसों का साग, मशरूम से बने व्यंजन, आचार आदि का प्रसंस्करण कर डिब्बा बंदी करके देश व विदेशों में विशेषकर कनाडा में अपने उत्पादों का निर्यात कर रहे हैं। इसके अलावा बेरोजगार नवयुवकों को अपने फार्म पर प्रशिक्षण देते हुए रोजगार भी मुहैया करवा रहे हैं। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. ए.के. छाबड़ा का कहना है कि खुम्ब में पाये जाने वाले फाइटोकेमिकल्स इसे एंटी बैक्टिरियल और एंटी फंगल बनाते है जो व्यक्ति को मौसमी संक्रमण को बचाने और रोग प्रतिरोधकता को मज़बूत बनाने में मदद करते है। खुम्ब के सेवन से इसमें मौजूद फॉलिक एसिड और आयरन शरीर में हीमोग्लोबिन के स्तर को बढ़ाने में मदद करता है। पौध रोग विभाग के अध्यक्ष डॉ. अजीत सिंह राठी का कहना है कि खुम्ब उत्पादन करके युवा वर्ग स्वरोज़गार प्राप्त कर सकते हैं। इसमें लागत कम आती है और मुनाफा अधिक होता है। डॉ. कुशल राज का कहना है कि खुम्ब के मूल्य संवर्धित उत्पाद जैसे अचार, बिस्कुट, पापड़, बढ़िया इत्यादि तैयार करके भी बाज़ार में बेचे जा सकते हैं, जिसकी बाज़ार में बहुत

मांग है। खुम्ब दिवस के संयोजक डॉ. सतीश कुमार ने कम लागत से खुम्ब उत्पादन की कई तकनीकों को लेकर चर्चा की। उन्होंने पराली को न जलाकर इसका उपयोग मशरूम के लिए कम्पोस्ट बनाने में किए जाने पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि इससे वातावरण दूषित नहीं होगा और मिट्टी में सूक्ष्म जीवी नष्ट नही होंगे। डॉ. राकेश चुघ ने औषधीय खुम्बों जैसे कार्डिसैप, शिटाके, लायनस मैने इत्यादि खुम्बों को उगाने की विधि पर विस्तार से चर्चा की। डॉ. विनोद मलिक ने बताया कि भूमिहीन व्यक्ति भी खुंब का उत्पादन कर सकता है और मुनाफ़ा कमा सकता है।

संवाद ब्यूरो

खुम्ब के फ़ायदे

- खुम्ब एक संतुलित आहार है।
- इसमें प्रोटीन की मात्रा 30-40 प्रतिशत तक पाई जाती है।
- शाकाहारी लोगों के लिए प्रोटीन का एक अच्छा स्रोत है।
- खुंब में विटामिन डी, कैल्शियम, पोटाशियम और फास्फोरस हड्डियों को कमजोर होने से रोक कर उन्हें मज़बूत बनाते हैं।
- दिल के रोगियों के लिए भी खुम्ब का सेवन लाभकारी है।
- खुम्ब में मौजूद लीन प्लांट प्रोटीन में न सिर्फ़ कैलोरी की मात्रा कम होती है, बल्कि फैट भी न के बराबर होता है।
- खुम्ब पोषण व औषधीय गुणों से भरपूर है। खुम्ब में कैलोरी और वसा की मात्रा कम होने की वजह से यह न सिर्फ़ वजन को बढ़ने से रोकने और वजन घटाने में सहायक है, बल्कि इसमें प्रोटीन, विटामिन सी, विटामिन बी, विटामिन डी, कॉपर, पोटाशियम, फास्फोरस, सेलेनियम, फाइओकेमिकल्स और एंटी आक्सीडेन्टस जैसे पोषक तत्व प्रचुर मात्रा में पाये जाते हैं जो व्यक्ति को विभिन्न तरह के रोगों से दूर रखने में मदद करते हैं।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय व महाराणा प्रताप बागवानी विश्वविद्यालय, करनाल के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह ने राष्ट्रीय खुम्ब दिवस के अवसर पर आयोजित राज्य स्तरीय कार्यक्रम के दौरान कहा कि मशरूम में पाए जाने वाले विशिष्ट औषधीय गुणों एवं स्वास्थ्य के प्रति लाभकारी होने के कारण ही यह इम्यूनिटी बूस्टर के रूप में काम करता है। अच्छे पोषक तत्व व औषधीय गुणों की वजह से इसके घर-घर उपयोग की आवश्यकता है। कार्यक्रम का आयोजन प्रगतिशील किसान सरदार हरपाल सिंह बाजवा के गांव भौर सैंदया (कुरुक्षेत्र) में बाजवा मशरूम फार्म की रजत जयंती के अवसर पर किया गया। उन्होंने कहा कि भारत विविध प्रकार के कृषि जलवायु परिस्थितियों से युक्त कृषि प्रधान देश है। मशरूम के विविधिकरण पर बल देते हुए उन्होंने कहा कि एक सफल मशरूम उत्पादक को मशरूम के बाजारीकरण का ज्ञान होना अति आवश्यक है, जिससे वह अधिक लाभ प्राप्त कर सके। उन्होंने बताया कि वर्षभर में तापमान के अनुसार विभिन्न प्रकार के मशरूमों को लगाया जा सकता है। उन्होंने बताया कि विश्वविद्यालय ने क्षेत्रीय मशरूम अनुसंधान केंद्र की स्थापना मुरथल जिला सोनीपत में की है। जल्द ही इसे देश के अग्रणी केंद्रों के रूप में विकसित किए जाने पर जोर दिया जाएगा।

प्रदेश में इस समय 8.50 लाख हेक्टेयर क्षेत्र पर सूक्ष्म सिंचाई की जा रही है तथा चालू वित्त वर्ष में 50 हजार हेक्टेयर क्षेत्र के अधीन लाने का लक्ष्य रखा गया है।

राज्य सरकार ने प्रदेश के कॉलेजों में पढ़ने वाले युवाओं को 'यातायात व प्रकृति' के बारे में ज़ागरूक करने के उद्देश्य से 'नेचर एंड ट्रैफिक इंटरप्रीटेशन सैंटर' खोलने का निर्णय लिया है।

पर्यटन अनुकूल बनाया जाएगा पुरातत्व संग्रहालय

मुख्यमंत्री मनोहर लाल ने पंचकूला में बनने वाले राज्य पुरातत्व संग्रहालय को पर्यटन अनुकूल बनाये जाने के निर्देश दिए हैं। 1.83 एकड़ भूमि पर बनने वाले संग्रहालय के निर्माण में लगभग 60 करोड़ रुपए की राशि खर्च होगी।

मुख्यमंत्री मनोहर लाल ने कहा कि संग्रहालय में आने वाले दर्शकों को पर्याप्त सुविधाएं दिए जाने के प्रबंध होने चाहिए। दर्शकों/पर्यटकों को भवन में अनुकूल माहौल मिले, इसके लिए भवन के बीच में ही ओपन गार्डन की व्यवस्था भी करें, जिसमें विभिन्न प्रकार के फूलों के पौधे हों। इससे न केवल लोगों को स्फूर्ति मिलेगी बल्कि वे मनोयोग से संग्रहालय को देखेंगे। उन्होंने कहा कि बिल्डिंग में कैफेटेरिया की भी पर्याप्त व्यवस्था हो।

उन्होंने कहा कि चूंकि संग्रहालय को देखने के लिए बच्चे और महिलाएं भी आएंगी ही। इसलिए भवन में क्रेच और बेबी फीडिंग रूम की भी व्यवस्था करें। मुख्यमंत्री ने जिम की व्यवस्था करने के लिए भी कहा।

इस संग्रहालय में न केवल ऐतिहासिक जानकारी उपलब्ध होगी बल्कि यहां आकर शोधार्थी शोध कार्य भी करेंगे। इसके लिए लाइब्रेरी और रिसर्च लैब की व्यवस्था भी भवन में की जाएगी। संग्रहालय में ब्रिटिश काल के दस्तावेज भी उपलब्ध होंगे। भवन में सिंधु घाटी और हड़प्पा संस्कृति के स्वरूप के दर्शन हों, ऐसा प्रयास किया जाएगा।

संवाद ब्यूरो

तिलियार लेक का सौंदर्यीकरण

रोहतक की तिलियार लेक का सौंदर्यीकरण किया जाएगा। दिल्ली रोड पर स्थित तिलियार पर्यटन स्थल का आधुनिक स्वरूप में विकसित किए जाने की योजना है। पर्यटन विभाग के एमडी आरएस वर्मा की ओर से इसका प्रस्ताव तैयार करवाया जा रहा है।

पहले चरण में दिल्ली रोड से लगता इसका आकर्षक प्रवेश द्वार बनाया जाएगा। इसकी चारदीवारी की मरम्मत होगी और इसकी वोटिंग कैपेसिटी बढ़ाई जाएगी। झील के अंदर स्थित आईलैंड को भी पक्षियों की सहूलियत को देखते हुए विकसित किया जाएगा। इसके अलावा यहां के पार्कों में मौसमी और सजावट के फूल पौधे लगाए जाएंगे।

गौरतलब है कि सेंट्रल जू अथॉरिटी की ओर से तिलियार स्थित मिनी चिड़ियाघर को विकसित किया जा रहा है। फिलहाल यहां अंतरराष्ट्रीय मानक पर दस नई बर्ड एबी बनकर तैयार है। उसमें पुराने बर्ड एबी के पक्षियों को शिफ्ट कर दिया गया है। साथ लगते एरिया में वाहनों की पार्किंग बनाई जाएगी।

एक गांव की कहानी भाईचारे की मिसाल है गांव बारना

कुरुक्षेत्र जिले में करीब दस हजार की आबादी वाला गांव बारना। केथल रोड व जींद रेलवे लाईन पर स्थित पिंडारसी रेलवे स्टेशन से तीन किलोमीटर की दूरी पर स्थित इस गांव में 4800 मतदाता हैं। गांव में सत्ताईस जातियों के परिवार बड़े ही प्रेम एवं सौहार्दपूर्ण माहौल में रहते हैं। गांव के भाईचारे की चर्चा गांव गुहांडों में बनी रहती है।

'बारना एक झरोखा' पुस्तक के अनुसार गांव की उत्पत्ति लगभग 450 वर्ष पूर्व हुई। गांव में दो पट्टी हैं जिसमें सिंहमार पट्टी व बाबा पट्टी शामिल हैं। बाबा पट्टी के परिवार लगभग 450 वर्ष पूर्व पड़ौसी गांव घराडसी से आकर बसे थे जबकि सिंहमार पट्टी के परिवार जींद जिले के गांव उड़ाना से आकर यहां बसे थे। गांव के बड़े-बुजुर्ग भी ऐसा ही मानते हैं।

ग्रामीणों ने बताया कि बणतीर्थ के नाम से गांव का नाम बारना पड़ा। बणतीर्थ को महाभारत काल के काम्यक वन का एक हिस्सा माना गया है। बण का मतलब वन क्योंकि इस स्थान पर गहन काम्यक वन हुआ करता था तथा तीर्थ का मतलब है जीवन देने वाला तालाब। गांव में हर वर्ष कुश्ती का दंगल आयोजित होता है जिसमें आस-पास के गांवों के पहलवान भाग लेते हैं। बारना की भूमि ने तीन ऐसे वीरों को जन्म दिया है जिन्होंने देश की रक्षा करते हुए अपने प्राणों की आहूति दी। लक्खी राम नागालैंड में, जीडीआर रैंक के हीरालाल सड़क दुर्घटना में तथा सुरेंद्र कुमार कारगिल सैक्टर में शहीद हुए थे।

1887 में जन्मे आचार्य पंडित भिक्षाराम शास्त्री इसी गांव के थे। आचार्य जी संस्कृत व्याकरण के प्रकाण्ड पंडित थे जिन्होंने सोलह ग्रन्थों की रचना की। 'शब्द ज्योत्सना' प्रमुख है। पंडित भिक्षाराम शास्त्री को भाषा विभाग ने संस्कृत विद्वान के रूप में सम्मानित किया था। गांव के उदयीमान लेखक देवीलाल बारना ने 'बारना: एक झरोखा' पुस्तक लिखी है जिसमें इतिहास समेत गांव का पूरा हाल बयां किया गया है। वे बताते हैं 2010 के बाद से यहां की हर जेब में मोबाइल है। बहुराष्ट्रीय कंपनियों के टावर लगे हैं। गांव में अच्छा खासा बाजार है जिसमें हर दैनिक जरूरत का सामान मिल जाता है। गांव में सरपंच के अलावा 16 पंच, एक ब्लॉक समिति सदस्य तथा चार नंबरदार हैं। गांव के हर प्रवेश द्वार पर सीसीटीवी की निगरानी है। व्यायामशाला है जो युवाओं को सेहतमंद बना रही है। आठ एकड़ में गोशाला है, जिसमें बेसहारा पशुओं को आश्रय दिया गया है।

ग्राम पंचायत की ओर से प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र को सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में प्रमोट कराया गया है जहां की चिकित्सा सेवाओं से आस-पास के अनेक गांव लाभान्वित हो रहे हैं। गांव का स्कूल आधुनिक सुविधाओं से लैस है। स्कूल की छत पर अक्षय ऊर्जा की व्यवस्था की गई है ताकि बिजली कट होने पर विद्यार्थियों को असुविधा न हो।

मनोज चौहान

ग्राम दर्शन

राज्य के प्रत्येक गांव की पूर्ण हो चुकी विकास परियोजनाओं की जानकारी 'ग्राम दर्शन' पोर्टल में डिजिटल रूप से उपलब्ध होगी। साथ ही, ग्राम पंचायत में करवाए जाने वाले आवश्यक कार्यों की सूची भी इस पोर्टल पर उपलब्ध होगी। दुनिया में कहीं भी बैठा कोई भी व्यक्ति ग्राम पंचायतों का विवरण देख सकेगा।

उद्देश्य

- ग्राम दर्शन ग्राम पंचायतों की वेबसाइट को संदर्भित करता है जो ग्राम पंचायतों के समग्र, सहभागितापूर्ण, पारदर्शी और जवाबदेही के रूप में कार्य करेगा।
- इसका उद्देश्य सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी (आईसीटी) का उपयोग करके प्रत्येक ग्राम पंचायत को एक विशिष्ट पहचान प्रदान करना है। सभी ग्राम पंचायतों की वेबसाइट होगी।
- केवल एक क्लिक से ग्रामीणों को आवश्यक जानकारी मिलेगी।
- पोर्टल पर राज्य की 6,197 ग्राम पंचायतों का संपूर्ण डाटा उपलब्ध होगा।
- 'ग्राम दर्शन' पर अन्य विभागों की विकास योजनाओं से संबंधित जानकारी और विस्तृत दिशा-निर्देशों को भी अपलोड किया जाएगा, जो ग्रामीण नागरिकों के लिए बहुत उपयोगी होगा।
- 'ग्राम दर्शन' ग्रामीण विकास की योजनाओं के बेहतर कार्यान्वयन और गरीब लोगों के जीवन का उत्थान करने में मदद करेगा।

ये रहेंगे वेबसाइट पर

प्रत्येक ग्राम पंचायत की वेबसाइट पर निर्वाचित प्रतिनिधियों की जानकारी होगी, जिनमें ग्राम पंचायत के सरपंच, पंच और ग्राम सचिव शामिल हैं। इसके अलावा, सार्वजनिक संपत्ति की सूची, विभाग द्वारा या राज्य के किसी भी अन्य विभाग द्वारा पहले से बनाई गई या बनाई जा रही संपत्ति का विवरण भी वेबसाइट पर अपलोड किया जाएगा। ग्राम पंचायतें वित्तीय परिसंपत्तियों का विवरण जैसे सावधि जमा और खर्चों का विवरण भी अपलोड करेंगी।

प्रदेश में 2500 शिक्षा मंदिर खोले जाएंगे। हर 10 किलोमीटर पर कॉलेज खोला जाएगा। आठवीं से 12वीं कक्षा तक के विद्यार्थियों को शिक्षा विभाग 8.13 लाख टैब देने की तैयारी कर रहा है।

पानीपत की हाली झील जून की छुट्टियों में बोटिंग के लिए तैयार हो जाएगी। निगम ने निर्माण कंपनी को 31 मई, 2021 तक प्रोजेक्ट पूरा करने का टारगेट दिया है।

लोकसाहित्य की समृद्ध भाषा 'हरियाणवी'

अरबी और हरियाणवी भाषा- हरियाणवी में अरबी शब्दावली की उपस्थिति भी कुछ इसी प्रकार की है। भारत से लोगों का अरब और अरब देशों के लोगों का इधर आना-जाना हजारों वर्ष पुराना रहा है। अरबी भाषा के अनेक शब्द हरियाणवी भाषा में देखने को मिलते हैं जैसे - अकीदा से अक़ीदी, अदल से अदल (पिछाण), अब्री से अब्री, अमली से अमली, अलबत: से अलबत:, अहदी से अहदी, इकलास से इकलास, ऐन से ऐन, क़द्र से कद्र, कफ़न से कफन, क़लमी से कलमी, कसाई, कारूरा से कारूरा, कुल्ला से कुल्ला, ख़ता से खता, खिलकत से खिलकत, ग़र्क से ग़र्क, ग़ारत से गारत, तक़रार से तकरार आदि।

फ़ारसी और हरियाणवी भाषा - फारसी ईरान की भाषा फ़ारस पर आधारित मानी जाती है। इस भाषा का काल ईसा से अढ़ाई हजार वर्ष से भी पूर्व माना जाता है। हरियाणवी में इस भाषा के शब्द इस प्रकार हैं कि विद्वान ही इनको सामान्य शब्दावली से अलग कर सकते हैं। कुछ शब्दों को प्रस्तुत किया जा रहा है - अज़ार से अजार, आबरू से आबरू, कंगूर से कंगूरा, कलफ़ से कलफ, काक: से काका, कारिंदा से कारिंदा, खैरसल्ला, ख़ोर से खोर, गप से गप, चिल्ल: से चिल्ला, चुग़ल से चुगल, चोगाना से चोगान, जंग से जंग, ज़बर से जबर, ज़रद से जरद, ज़हूरा से जहूरा, तंबा से तंबा, तर से तर, तलाक़ से तलाक, ताव से ताव, तुक्का से तुक्का, दंगल से दंगल, दारु से दारू, दिक़ से दिक, दिलावर से दिलावर, दीद से दीदा, देग से देग, निहाल से निहाल आदि । तुर्की और हरियाणवी भाषा - तुर्की मूलत: अरबी और फारसी का मिश्रित रूप है, इसकी 35 के करीब बोलियां हैं। हरियाणवी से इसका सक्रिय संबंध बाबर के आक्रमण के समय हुआ, क्योंकि पानीपत की पहली लड़ाई हरियाणा में 1526 ई. लड़ी गई थी। हरियाणवी में तुर्की भाषा के तुल्य तथा सादृश्य शब्द मिलते हैं। तुल्य शब्द - कलगी से कलगी, कूच से कूच, चोगा से चोगा, जाज़म से जाजम, बुलाक से बुलाक आदि । हरियाणवी तद्भव शब्द : उर्दू से उड़दू, कमची से कामची, कलाबतून से कलाबत्तू, क़ाब से काबुआ, काबू से काब्बू, कार्टूस से कारतूस, कूरता से कुड़ता, चाकू से चक्कू, तमगा से तगमा, तर्कु से ताक्कू, तोप से तोब, बेगम से बेग्गम, बिलाती से बिलाती हालवा से हलवा,दिक्खत से दिक्कतआदि। अनेकों ऐसे शब्द हैं जो हरियाणवी में आज भी प्रचलित हैं।

पंजाबी एवं हरियाणवी भाषा - पंजाबी व हरियाणवी भाषा का परस्पर गहरा संबंध है। हरियाणवी भाषा का इतिहास पंजाबी भाषा से अधिक पुराना है, बावजूद इसके हरियाणवी ने अनेक पंजाबी शब्दों को समाहित किए हैं। उदाहरण के लिए - खादां, पीदां, जादां, रोंद्दा, सौदां, हासंदा, लेदां, कित्थै, उत्थै, रहदां, रहदां, लिखंदा, मिलादां, सिलादां, पादां, हिलदां, मिलदां, तहलदां, रहणदां, कित्थ, कड़ै, जित्थै आदि।

हरियाणवी भाषा का विविध बोलियां - चार कोस पै बदलै पाणी, आठ कोस पै बदलै वाणी - की कहावत हरियाणवी भाषा पर सही रूप में चरितार्थ होती है। हरियाणवी भाषा की अनेक बोलियां जो नालों के रूप में हरियाणवी भाषा रूपी नदी को निरंतर सींच रही है, विशेष रूप से उल्लेखनीय है। इनको अलग-अलग नाम दिए गए- कौरव क्षेत्र में बोले जाने वाली बोली को कौरवी, बांगर क्षेत्र में बोले जाने वाली को बांगरू, बागड़ भू-भाग में बोले जाने वाली को बागड़ू व बागड़ी, अहीर क्षेत्र में अहीरवाटी, ठेठ प्रदेश के मध्य देसी लोगों द्वारा बोले जाने वाली बोली को देसी व देसड़ी, जाटों की प्रमुख भाषा होने के वजह से जाटू, खड़ी बोली का जिस भू-भाग में प्रचलन है, वहां पर इसे खड़ी बोली व ऊँची बोली की संज्ञा दी गई, देहली तथा आस-पास के क्षेत्र में इसे देहलवी के नाम से जाना गया , हरियाणा में बोले जाने की बदौलत इसे हरियानी, हरियाणी, हरियानवी, हरियाणवी, हरियाणई हरियाणी आदि नाम दिए गए, मेवात क्षेत्र में इसको मेवाती के नाम से जाना गया, ब्रज से सटे हुए भू-भाग में बोले जाने वाली बोली को ब्रज भाषा की संज्ञा दीद्ध इसके अतिरिक्त स्थानों के आधार पर इसे रोहतकी, देसवाली, खाद्दरी, अम्बालवी आदि नामों से भी हरियाणवी भाषा की अलग-अलग बोलियों को अलग-अलग नामों से पुकारा जाता है। हरियाणवी भाषा को सीमाओं के क्षेत्र में नहीं बांधा जा सकता, क्योंकि यह सम्पूर्ण उत्तर भारत की भाषा है। वर्तमान पाकिस्तान में भी इसे बोलने वाले आज भी विद्यमान हैं।

भाषा की लिपि सबसे बड़ी है बाधा - हरियाणवी भाषा देवनागरी लिपि में लिखी जाती है, जब भी राष्ट्रीय स्तर पर हरियाणवी को संविधान की सूची में शामिल करने के लिए प्रयास किए गए, तब-तब इस भाषा की अपनी लिपि नहीं होने की वजह से बाधा आई । इसके लिए सरकारी तौर पर भी हरियाणवी लिपि बनाने के लिए अभी कोई सार्थक प्रयास नहीं किए गए हैं।

डॉ. महासिंह पूनिया

राग, ताल व वाद्य यंत्रों के नाम पर हैं गांव के नाम

हरियाणा में जींद का इतिहास काफी लोकप्रिय है। जींद की रियासत पर लंबे समय तक मुस्लिम शासकों का राज रहा है। मगर बहुत कम लोग जानते है कि जींद का शास्त्रीय संगीत से एकदम अनोखा नाता रहा है। जिले के एक दर्जन से ज्यादा गांवों के नाम राग, ताल, लय और वाद्य यंत्रों पर आधारित हैं। इसमें भी भूगोल और सांझ-सवेरे का ध्यान रखा गया है। जिले की पूर्व दिशा में पड़ने वाला गांव मलार सुबह गाए जाने वाले राग मल्हार पर आधारित है। इसी तरह सुबह के राग कलावती पर गांव कलावती का नाम है।

बताते हैं मुगलों का संगीत विद्या से काफी लगाव था। तत्कालीन शासक ने यहां के गांवों का नामकरण किया जो संगीत जगत से मिलते जुलते हैं।

हरियाणा संग्रहालयों के अधिकृत कोऑर्डिनेटर और पुरातत्विद देवराज सिरोही एक ब्रिटिश गजेटियर का उल्लेख करते हैं। इसके अनुसार 1755 से 1867 के बीच जींद के गांवों का नामकरण रागों के आधार पर हुआ। उस दौरान जो राजा यहां थे, वे बेहद संगीत प्रेमी थे। हारमोनियम उस समय का लोकप्रिय वाद्ययंत्र रहा था।

इन गांवों का आज भले ही शास्त्रीय संगीत के गायन और वादन से वैसा नाता नहीं हैं, लेकिन सफीदों में सालों से हारमोनियम में सुर पैदा करने वाले रिड्स आज भी बनते हैं। इन्हीं मूल यंत्रों से भोपाल, कोलकाता, अमृतसर और पानीपत के मशहूर हारमोनियम बनाए जाते हैं। इस पारंपरिक हुनर का इस्तेमाल कभी मुगलों ने किया। संग्राहलय में रखे ऐतिहासिक तानपुरे और सितार भी इसका प्रमाण है।

कौन से गांव के नाम हैं राग पर

गांव	राग
मलार	मल्हार राग पर।
पिल्लूखेड़ा	राग पीलू पर।
मालश्रीखेड़ा	राग मालश्री पर।
देशखेड़ा	देश राग पर।
जय-जयवंती	राग जय-जयवंती पर।
भैरव खेड़ा	राग भैरव पर।
गुलकनी	राग गुणकली पर।
खमाज खेड़ा	राग खमाज पर।
खटकड़	राग खट पर।
ललितखेड़ा	राग ललित पर।
श्रीरागखेड़ा	राग श्रीराग पर।
बागलवाला	राग बागेश्री पर।
नारायणगढ़	राग नारायणी पर।
सरफाबाद	राग सरपरदा पर।
हमीरगढ़	राग हमीर पर।
अलेवा	राग अल्हैया बिलावल पर।
हंस डैहर	राग हंसध्वनि पर।
सिंधवीखेड़ा	राग सिंधवी पर।

ताल और वाद्य यंत्र पर गांव के नाम

ढिगाना	ताल दोगुना करने को भी कहते हैं।
भागखेड़ा	हर ताल के हिस्से होते हैं। जिन्हें भाग से पुकारा जाता है।
झमौला	झप ताल पर।
कालवा	इससे मात्राओं और तालों की रचना होती है। तान बनती है।
करेला	कहरवा ताल पर।
रूपगढ़	रूपक ताल पर।
झांझ	वाद्य यंत्र है

संकलन : डॉ विजेंद्र वशिष्ठ

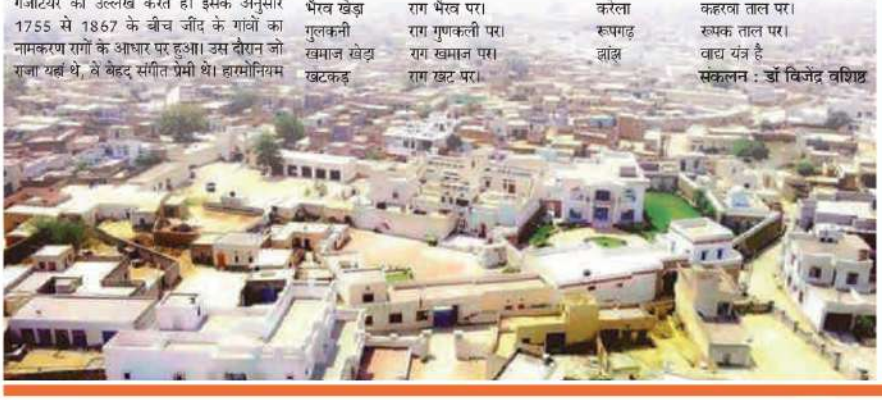

चिंतन से बनता चरित्र

गूगल से सीखें, यूट्यूब से सीखें। सर्च करने के लिए आप जो भी शब्द टाइप करेंगे वह या उस जैसा चंद सेकंड में आपके सामने होगा। केवल वही नहीं होगा बल्कि उस जैसे अनेक शब्द, न्यूज़, लेख, चित्र तथा फिल्में सामने होंगे। जो भी मैटर आपके सम्मुख होगा उसे आप पढ़ेंगे, देखेंगे और हो सका तो आत्मसात भी करेंगे। ऐसा एक बार होगा, अनेक बार होगा और बार बार होगा। आप फिर वैसा ही बनते चले जाएंगे जैसा आप आत्मसात करते जा रहे हैं। जैसे अन्न का प्रभाव तन पर होता है ठीक वैसा ही प्रभाव आपके विचारों का आपके जीवन पर होने लगेगा।

गूगल या यू ट्यूब पर जितनी देर आपका टाइप किया हुआ शब्द टिकेगा उतनी ही अधिक मात्रा में आपके पास संबंधित सामग्री आती चली जाएगी। आपके विचार, आपका चरित्र आपका व्यक्तित्व उसी के अनुरूप गढ़ता चला जाएगा। जितनी बार देखेंगे सुनेंगे वह और प्रगाढ़ होता जाएगा। जितने दिन, माह व वर्ष देखेंगे वह आपके जीवन में और गहराई में चलता जाएगा।

वे बन जाएंगे आपके संस्कार। एक संस्कार वे, जो आपको अपने माता-पिता, परिवार व समाजिक माहौल से मिले हैं और एक संस्कार ये जो आपने खुद गढे हैं। अपने लिए। किसी और के लिए नहीं, अपने लिए।

अब अपने शरीर पर आ जाइये। अपने दिलो दिमाग की आकृति एवं मनोस्थिति पर चिंतन करें। छोड़िए आप स्मार्ट फोन या कम्प्यूटर। माना आप उनसे कोई लगाव नहीं रखते। कोई बात नहीं।

आपकी अपनी दिनचर्या क्या है? आप अपने जीवन को कैसे जीते हैं? जब तक जागते हैं, मन में क्या क्या चिंतन अथवा मनन करते हैं? कहने का मतलब आप अपनी दिनचर्या के दौरान अपने मन मस्तिष्क में कौन-कौन से शब्द या विचार टाइप करते हैं। दिन भर किस तरह के विचार चलते हैं। मान लो सुबह उठते ही आपने अपने दिमाग में कमजोर विचार को टाइप कर लिया तो दिमाग में उसी प्रकार के अनेक शब्द यानि कमजोर विचार आते चले जाएंगे। ऐसे-ऐसे विचारों की श्रंखला आपके दिमाग में उतर आएगी।

अगर आपने किसी के प्रति ईर्ष्या, क्रोध, काम व अन्य दृष्टिकोण से विचार टाइप कर लिया तो फिर आपके दिमाग में वही भाव श्रेणीबद्ध होते चले जाएंगे। यानि चिंतन के जरिए आप जो चाहते हैं, जो इच्छा जताते हैं आपका दिमाग उस पर तत्काल प्रभाव से काम करना शुरू कर देता है। दिमाग को कमांड आपने ही दी है।

आपके द्वारा टाइप किया गया विचार आपके चारों ओर प्रकृति में संचारित होने लगेगा। उसी प्रकार का वातावरण आपके चारों ओर बनने लगेगा। विचारों को क्रियात्मक दशा देने के लिए प्रकृति आपका पूरा सहयोग करने लगेगी।

आपने नकारात्मक विचार टाइप किया था तो आप नकारात्मक बनते चले जाएंगे। कार्य भी नकारात्मक होने लगेंगे। इस नकारात्मकता का प्रभाव आपके संपर्क में रहने वालों पर भी होने लगेगा। चाहे वह परिवार, कार्यालय या अन्य क्षेत्र हो, सभी पर उसका प्रभाव होता चला जाएगा।

आपकी ओर से औरों की ओर जैसे भाव जाएंगे, हो सकता है सामने से भी वही भाव आप तक पहुंचें। यानि आपने जिस रंग की बॉल फैंकी थी उसी रंग की बॉल वापस आएगी। कम मात्रा में नहीं, बल्कि ज्यादा मात्रा में आएंगी। फिर एक दिन आप यह भी कहेंगे 'यह सब मेरे साथ ऐसा क्यों हो रहा है?'

इसीलिए तो कहते हैं कोई भी इन्सान अपने भाग्य का निर्माता स्वयं होता है।

वह जैसा सोचता है वैसा ही बन जाता है। यह विज्ञान है, सूक्ष्म विज्ञान। अगर आप अपने दिलो दिमाग पर सदैव सकारात्मक सोच टाइप करते चलेंगे। जैसे किसी की मदद करने की, दुआ देने की, प्रोत्साहन देने की, सुख समृद्धि की, निरोगी होने की आदि आदि। तो उस तरह के विचारों की लंबी श्रंखला आपका स्वागत करेगी। न केवल स्वागत करेगी बल्कि आपकी मदद करेगी। कई गुणा करेगी।

ऐसा टाइप करने मात्र से आनंद मिलेगा, सुकून मिलेगा और जीवन के प्रति विश्वास जगेगा। आप दिन भर हल्कापन महसूस करेंगे। जीवन सहज व सरल होता चला जाएगा। हो सकता है एक दिन आप स्वयं कहें कि यह तो चमत्कार हो गया।

मनोज प्रभाकर

राई स्पोर्ट्स स्कूल को इसी साल खेल विश्व विद्यालय में तब्दील किया जाना है। इसके बनने से राज्य में नई खेल प्रतिभाओं का विकास होगा।

औद्योगिक नगरी पानीपत को नये बस स्टैंड की सौगात मिलने जा रही है। गांव सिवाह में करीब 6.50 एकड़ में आधुनिक तरीके से बनाये जा रहे इस बस स्टैंड पर 17 करोड़ रुपए की लागत आने की संभावना है।

राष्ट्रीय पर्व : 26 जनवरी

2 साल 11 माह 18 दिन में तैयार हुआ था संविधान

छब्बीस जनवरी का दिन हमारे लिए ख़ास महत्त्व रखता है। इसी दिन भारत का संविधान लागू हुआ था यानि देश में कानून के राज की शुरुआत हुई। इस दिन को राष्ट्रीय पर्व का दर्ज़ा प्राप्त है। प्रतिवर्ष इस दिन को हर्षोल्लास के साथ मनाया जाता है।

इंडिया गेट पर राज्यों की झांकियां निकाली जाती हैं और राष्ट्रपति को 21 तोपों की सलामी दी जाती है। 26 जनवरी, 2021 को भारत में 72वां गणतंत्र दिवस मनाया जाएगा। राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी समेत देश की कई गणमान्य व प्रतिष्ठित शख्सियतें इस गणतंत्र दिवस समारोह में शामिल होंगी।

भारत के आजाद होने के बाद संविधान सभा का गठन हुआ। संविधान सभा ने अपना काम 9 दिसंबर, 1946 से शुरू किया। दुनिया का सबसे बड़ा लिखित संविधान 2 साल, 11 माह, 18 दिन में तैयार हुआ। संविधान सभा के अध्यक्ष डॉ. राजेन्द्र प्रसाद को 26 नवंबर, 1949 को भारत का संविधान सौंपा गया, इसलिए 26 नवंबर को संविधान दिवस के रूप में प्रति वर्ष मनाया जाता है। भारत 26 जनवरी 1950 को 10:18 बजे गणराज्य बना और करीब छह मिनट बाद डॉ. राजेन्द्र प्रसाद ने राष्ट्रपति भवन के दरबार हाल में गणराज्य के पहले राष्ट्रपति की शपथ ग्रहण की।

संविधान सभा ने संविधान निर्माण के समय कुल 114 दिन बैठक की। इसकी बैठकों में प्रेस और जनता को भाग लेने की आजादी थी। अनेक सुधारों और बदलावों के बाद सभा के 308 सदस्यों ने 24 जनवरी, 1950 को संविधान की दो हस्तलिखित कॉपियों पर हस्ताक्षर किए। इसके दो दिन बाद संविधान 26 जनवरी को यह देशभर में लागू हो गया। 26 जनवरी का महत्त्व बनाए रखने के लिए इसी दिन संविधान निर्मात्री सभा द्वारा स्वीकृत संविधान में भारत के गणतंत्र स्वरूप को मान्यता प्रदान की गई। यह दुनिया का सबसे लंबा लिखित संविधान है, जिसमें 444 अनुच्छेद 22 भागों व 12 अनुसूचियों में बांटा गया था। इसमें स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व की अवधारणा फ्रांसीसी संविधान से प्रेरित है जबकि पंचवर्षीय योजना की प्रेरणा सोवियत संघ के संविधान से ली गई। 'जन गण मन' को संविधान सभा ने 24 जनवरी,1950 को राष्ट्रगान के रूप में स्वीकार किया।

डॉ. भीमराव अंबेडकर थे प्रारूप समिति के अध्यक्ष

संविधान सभा के सदस्य भारत के राज्यों की सभाओं के निर्वाचित सदस्यों के द्वारा चुने गए थे। डॉ. भीमराव आंबेडकर, जवाहरलाल नेहरू, डॉ. राजेंद्र प्रसाद, सरदार वल्लभ भाई पटेल, मौलाना अब्दुल कलाम आजाद इस सभा के प्रमुख सदस्य थे। संविधान निर्माण में कुल 22 समितियां थीं जिसमें प्रारूप समिति (ड्राफ्टिंग कमेटी) सबसे प्रमुख और महत्त्वपूर्ण समिति थी। इस समिति का कार्य संपूर्ण संविधान लिखना या निर्माण करना था। प्रारूप समिति के अध्यक्ष डॉ. भीमराव अंबेडकर थे।

पुस्तकालय में संविधान की मूल प्रतियां

भारतीय संविधान की दो प्रतियां जो हिंदी और अंग्रेजी में हाथ से लिखी गई। भारतीय संविधान की हाथ से लिखी मूल प्रतियां संसद भवन के पुस्तकालय में सुरक्षित रखी हुई है। भारत के पहले राष्ट्रपति डॉ.राजेंद्र प्रसाद ने गवर्नमेंट हाउस में 26 जनवरी, 1950 को शपथ ली थी। गणतंत्र दिवस की पहली परेड 1955 को दिल्ली के राजपथ पर हुई थी। 29 जनवरी को विजय चौक पर बीटिंग रिट्रीट सेरेमनी का आयोजन किया जाता है जिसमें भारतीय सेना, वायुसेना और नौसेना के बैंड हिस्सा लेते हैं। गणतंत्र दिवस के मौके पर प्रधानमंत्री अमर ज्योति पर शहीदों को श्रद्धांजलि देते है, जिन्होंने देश के आजादी में बलिदान दिया।

गणतंत्र दिवस समारोह

26 जनवरी को गणतंत्र दिवस समारोह पर भारत के राष्ट्रपति द्वारा भारतीय राष्ट्र ध्वज को फहराया जाता है और इसके बाद सामूहिक रूप में खड़े होकर राष्ट्रगान गाया जाता है। गणतंत्र दिवस को पूरे देश में विशेष रूप से भारत की राजधानी दिल्ली में बड़े उत्साह से मनाया जाता है। इस अवसर के महत्त्व को चिह्नित करने के लिए हर साल एक भव्य परेड इंडिया गेट से राष्ट्रपति भवन तक राजपथ पर राजधानी, नई दिल्ली में आयोजित किया जाता है। इस भव्य परेड में भारतीय सेना के विभिन्न रेजिमेंट, वायुसेना, नौसेना आदि सभी भाग लेते हैं। इस समारोह में भाग लेने के लिए देश के सभी हिस्सों से राष्ट्रीय केडेट कोर व विभिन्न विद्यालयों से बच्चे आते हैं, समारोह में भाग लेना एक सम्मान की बात होती है। परेड प्रारंभ करते हुए प्रधानमंत्री अमर जवान ज्योति (सैनिकों के लिए एक स्मारक) जो राजपथ के एक छोर पर इंडिया गेट पर स्थित है पर पुष्प माला डालते हैं, इसके बाद शहीद सैनिकों की स्मृति में दो मिनट मौन रखा जाता है। इसके बाद प्रधानमंत्री, अन्य व्यक्तियों के साथ राजपथ पर स्थित मंच तक आते हैं, राष्ट्रपति बाद में अवसर के मुख्य अतिथि के साथ आते हैं। परेड में विभिन्न राज्यों की प्रदर्शनी भी होती हैं, प्रदर्शनी में हर राज्य के लोगों की विशेषता, उनके लोकगीत व कला का दृश्यचित्र प्रस्तुत किया जाता है। हर प्रदर्शनी भारत की विविधता व सांस्कृतिक समृद्धि प्रदर्शित करती है।

संवाद ब्यूरो

'जाते हुए लम्हों' को सलाम-ए-अदब

हरियाणा उर्दू अकादमी ने उर्दू पुस्तकों को पुरस्कार देने व पांडुलिपियों के प्रकाशन के लिए अनुदान देने की घोषणा की है। ये पुरस्कार व अनुदान पिछले पांच वर्षों के लिए दिए जाएंगे। इस बारे में जानकारी देते हुए अकादमी के निदेशक डॉ. चंद्र त्रिखा ने बताया कि सूचना, जनसंपर्क एवं भाषा विभाग की अतिरिक्त मुख्य सचिव व अकादमी की कार्यकारी उपाध्यक्ष श्रीमती धीरा खंडेलवाल द्वारा औपचारिक तौर पर मंजूरी देने के बाद उर्दू अकादमी ने 14 पुस्तकों को पुरस्कार देने तथा चार पांडुलिपियों को अनुदान प्रदान करने का निर्णय लिया गया है।

डॉ. त्रिखा ने जानकारी दी कि हरियाणा के जिन उर्दू लेखकों की पद्य पुस्तकों का चयन हुआ है उनमें स्वर्गीय श्री महेन्द्र प्रताप 'चाँद' द्वारा लिखित पुस्तक 'जाते हुए लम्हो', डॉ. कुमार पानीपती की पुस्तक 'आंसुओं के मोती', स्वर्गीय डॉ. गोपाल कृष्ण शफक की पुस्तक 'शेर-ए-शफक', श्री कृष्ण कुमार तूर की कृति 'तलिसम-ए-तूर', श्री शम्स तबरेजी की 'कलाम-ए-शम्स तबरेजी', डॉ. हिम्मत सिंह सिन्हा नाज़िम की 'नकूश-ए-जीमल', डॉ. कुमार पानीपती की 'अहद-ए-नौ-की-सिसकियों का साज है मेरी गजल' और गद्य पुस्तकों में श्री बी. डी.कालिया 'हमदम' की 'आबशार-ए-अदब', डॉ. इन्दु गुप्ता की 'सुन्हरा कफस', डॉ. देसराज सपरा की 'खज़ाना-ए-अदब', डॉ. हकीम कमरूद्दीन जाकिर की 'मुसलह कौम मौलाना हाली', श्री एम.एम. जुनेजा की 'भगत सिंह की दिन-ब-दिन बढ़ती हुए मुकबूलीयत', श्री बी.डी. कालिया 'हमदम' की 'बड़ी तहजीब है उर्दू जबान में' तथा डॉ. सुल्तान अंजुम की पुस्तक 'जाविया-ए-फिक्र-ओ-नजर' हैं। इनके अलावा जिन लेखकों की पांडुलिपियां प्रकाशन के लिए सहायतानुदान हेतु मंजूर की गई हैं, उनमें श्री एस.एल. धवन की पुस्तक मसौदा 'जवाहरात-ए-सुखन'(पद्य), स्वर्गीय श्री अखगर पानीपती की 'जख्मों-के-गुलाब'(पद्य), श्री विजेन्द्र गाफिल की 'सहरा-सहरा-चाँद'(पद्य) तथा डॉ. सुल्तान अंजुम की 'ख्वाब जिन्दा हैं'(गद्य) शामिल हैं।

अकादमी निदेशक डॉ. चंद्र त्रिखा ने आगे बताया कि पुरस्कार के लिए चयन की गई प्रत्येक पुस्तक के लेखक को हरियाणा उर्दू अकादमी की तरफ से सम्मान-राशि 21,000 रुपए दी जाएगी जबकि प्रकाशन के लिए चयनित प्रत्येक पांडुलिपि के रचयिता को प्रकाशन के कुल खर्च का 75 प्रतिशत या अधिकतम 15,000 रुपए दिए जाएंगे।

संवाद ब्यूरो

गणतंत्र दिवस

प्राची से झांक रही ऊषा

प्राची से झांक रही ऊषा,
कुंकुम-केशर का थाल लिये।
हैं सजी खड़ी विटपावलियां,
सुरभित सुमनों की माल लिये

गंगा-यमुना की लहरों में,
है स्वागत का संगीत नया।
गूंजा विहगों के कण्ठों में,
है स्वतन्त्रता का गीत नया

प्रहरी नगराज विहंसता है,
गौरव से उन्नत भाल किये।
फहराता दिव्य तिरंगा है,
आदर्श विजय-सन्देश लिये

गणतन्त्र-आगमन में सबने,
मिल कर स्वागत की ठानी है।
जड़-चेतन की क्या कहें स्वयं,
कर रही प्रकृति अगवानी है

कितने कष्टों के बाद हमें,
यह आज़ादी का हर्ष मिला।
सदियों से पिछड़े भारत को,
अपना खोया उत्कर्ष मिला

धरती अपनी नभ है अपना,
अब औरों का अधिकार नहीं।
परतन्त्र बता कर अपमानित,
कर सकता अब संसार नहीं

क्या दिये असंख्यों ही हमने,
इसके हित हैं बलिदान नहीं।
फिर अपनी प्यारी सत्ता पर,
क्यों हो हमको अभिमान नहीं

पर आज़ादी पाने से ही,
बन गया हमारा काम नहीं।
निज कर्त्तव्यों को भूल अभी,
हम ले सकते विश्राम नहीं

प्राणों के बदले मिली जो कि,
करना है उसका त्राण हमें।
जर्जरित राष्ट्र का मिल कर फिर,
करना है नव-निर्माण हमें

इसलिये देश के नवयुवको!
आओ कुछ कर दिखलायें हम।
जो पंथ अभी अवशिष्ट उसी,
पर आगे पैर बढ़ायें हम

भुजबल के विपुल परिश्रम से,
निज देश-दीनता दूर करें।
उपजा अवनी से रत्न-राशि,
फिर रिक्त-कोष भरपूर करें

दें तोड़ विषमता के बन्धन,
मुखरित समता का राग रहे।
मानव-मानव में भेद नहीं,
सबका सबसे अनुराग रहे,

कोई न बड़ा-छोटा जग में,
सबको अधिकार समान मिले।
सबको मानवता के नाते,
जगतीतल में सम्मान मिले

विज्ञान-कला कौशल का हम,
सब मिलकर पूर्ण विकास करें।
हो दूर अविद्या-अन्धकार,
विद्या का प्रबल प्रकाश करें

हर घड़ी ध्यान बस रहे यही,
अधरों पर भी यह गान रहे।
जय रहे सदा भारत मां की,
दुनिया में ऊंची शान रहे

महावीर प्रसाद 'मधुप'

पी सी मीणा, भा.प्र.से. प्रबंध निदेशक, संवाद (सूचना जन संपर्क एवं भाषा विभाग) हरियाणा द्वारा हरियाणा सरकार के लिए कमरा नं. 314, दूसरी मंजिल, लघु सचिवालय, सेक्टर-1, पंचकूला से प्रकाशित।
कार्यालय : संवाद सोसायटी एससीओ 23, पहली मंजिल, सेक्टर 7, चंडीगढ़ फोन : 0172-2723814, 2723812 email : editorsamvad@gmail.com